

अक्टूबर २०११

मूल्य: ₹ १०

दादावाणी



चलो आज भर्जे, प्रकट निज दीपक को दिपावली पर, 'मैं' 'मैं' मे समा जाऊँ, परमाणु मात्र को आज न छूऊँ

तंत्री तथा संपादक :
डिम्पल मेहता
वर्ष : ६, अंक : १२
अखंड क्रमांक : ७२
अक्तुबर २०११

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ. : अडालज,
जि. : गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

e-mail :

dadavani@dadabagwan.org

www.dadabagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of

Mahavideh Foundation

5, Mamtapark Society,

Bh. Navgujarat College,

Usmanpura, Ahmedabad-14.

Owned by

Mahavideh Foundation

5, Mamtapark Society,

Bh. Navgujarat College,

Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printed at

Amba Offset

Basement, Parshvanath

Chambers, Nr.RBI,

Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

Mahavideh Foundation

5, Mamtapark Society,

Bh. Navgujarat College,

Usmanpura, Ahmedabad-14.

Editor : Dimple Mehta

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल का

भारत : ८०० रुपये

यु.एस.ए. : १५० डॉलर

यु.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये

यु.एस.ए. : १५ डॉलर

यु.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D./M.O. 'महाविदेह

फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र

के पते पर भेजें।

दादावाणी

रोज़मर्रा व्यवहार में क्रोध के सामने उपाय

संपादकीय

रोज़ के जीवन व्यवहार में व्यक्ति से कभी-कभी क्रोध-गुस्सा तो हो ही जाता है। उसका क्या कारण होगा? क्रोध हो जाना, वह कमजोरी है। उस कमजोरी को सँभालकर रखनी चाहिए या उस कमजोरी को दूर करने के कोई उपाय भी करने चाहिए? मान लो कि शायद दूसरें भूल करते हों, लेकिन उसमें हमें क्यों कमजोर होना चाहिए?

सामान्य तौर पर ऐसी मान्यता प्रवर्तित है कि क्रोध करके इच्छित परिणाम प्राप्त कर सकते हैं या दूसरों को सुधार सकते हैं। किन्तु उस मान्यता की सत्यता के विषय में क्या कोई प्रमाण प्राप्त हो सका है? क्रोध करे मतलब पहले खुद का बिगड़ता है और फिर सामनेवाले का भी बिगड़ता है, अर्थात् परिणाम में तो दोनों पक्षों का नुकसान ही है न! मनुष्य जीवन भवोभव की कमाई करने के लिए है या नुकसान करने के लिए है? ये तो हमें सोचना ही पड़ेगा न? समझदार और सयाने मनुष्य, क्रोध करना उसे हितकारी मानते नहीं हैं और यदि कभी हो जाए तो फिर से ऐसा नहीं हो उसकी सावधानी रखने का पुरुषार्थ करते रहते हैं। क्रोध हो जाने के बाद उसका फायदा क्या हुआ, ऐसा हिसाब निकालें तो भी क्रोध कम हो जाए या फिर बंद हो जाता है। विचार करने से क्रोध-गुस्सा खतम हो सके ऐसा है।

कई लोगों को ऐसा प्रश्न होता होगा कि जीवन व्यवहार चलाना है इसलिए दूसरों को कभी कुछ कहना तो पड़ता है न? कभी झिड़काना भी पड़ता है या क्रोध भी करना पड़ता है, वहाँ क्या उपाय करना चाहिए? परम पूज्य श्री दादा भगवान इस विषय में कहते हैं कि जहाँ ज़रूरत पड़े वहाँ कहना चाहिए, लेकिन राग-द्वेष रहित। एक आँख में प्रेम रखना है और एक आँख में सख्ती रखनी है। सख्ती से सामनेवाले को ज्यादा नुकसान नहीं होता, लेकिन क्रोध करने से बहुत नुकसान होता है। बार-बार कहते रहना वो भी गुनाह है और नहीं कहना, वो भी गुनाह है। 'नहीं कहना' वो भी एक तरह का अहंकार है। यदि अहंकार करना ही है तो ऐसा अहंकार करने जैसा है कि 'भले ही मेरे निमित्त से किसीको सुख नहीं हो, किन्तु किसीको कभी भी किंचित् मात्र दुःख तो होना ही नहीं चाहिए।' तो वो अहंकार मोक्ष में जाने के लिए काम लगेगा! हर एक बात में हम सामनेवाले को एडजस्ट हो जाए तो जीवन कितना सरल हो जाएगा! और वैसे भी, साथ में क्या ले जाना है? लेन-देन के हिसाब पूरे करके अपने-अपने गाँव चले जाना है, तो फिर ये झंझट किसलिए करनी है?

आश्रित को मारना, क्रोध से दुःख पहुँचाना, वो बहुत बड़ा गुनाह कहलाता है। संसार व्यवहार चलाना है, लेकिन वो आदर्श होना चाहिए। किसीको भी दुःख नहीं हो ऐसा व्यवहार होना चाहिए। जहाँ ज़रूरत हो, वहाँ दंड देने में हर्ज नहीं है, लेकिन क्रोध करने में हर्ज है। ये कमजोरी नहीं होनी चाहिए। ऐसी कमजोरी हुई, इसलिए सामनेवाले मनुष्य पर प्रभाव नहीं पड़ता और प्रभाव नहीं पड़ता इसलिए कोई कार्य नहीं होता। कोई भी कार्य हमेशा प्रभाव से ही होता है। हमारा पुरुषार्थ क्या होना चाहिए कि क्रोध की कमजोरी खुद में नहीं होनी चाहिए। जिसमें कमजोरी नहीं होती उसकी परसनालिटी (प्रभाव) पड़ती है। और परसनालिटी कब आती है? विज्ञान जानें तब परसनालिटी आती है।

प्रस्तुत संकलन में परम पूज्य दादाश्री ने, जीवन व्यवहार में क्रोध से मुक्त होने के भिन्न-भिन्न उपाय, विज्ञान की दृष्टि से बहुत ही सरलता से समझाए हैं, जो हर किसीको ध्येय प्राप्ति की पूर्णता के पुरुषार्थ के लिए पथदर्शक बन पड़ेगा, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद....

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी ‘चंदुभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधार कर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

रोज़मर्रा व्यवहार में क्रोध के सामने उपाय

क्रोध होने का कारण

कभी गुस्सा हो जाते हो किसी पर?

प्रश्नकर्ता : हो जाता हूँ।

दादाश्री : ऐसा! वह कमजोरी नहीं कहलाती? तेरी वीकनेस नहीं कहलाती?

प्रश्नकर्ता : वीकनेस है ही।

दादाश्री : क्या खाने से तुम्हें गुस्सा आता है?

प्रश्नकर्ता : वो हो जाता है, ऐसे ही!

दादाश्री : गुस्सा, क्या वह कमजोरी नहीं है? तो ये सारी कमजोरियाँ, इतना सब पढ़ते हो और कमजोरियों को क्यों रहने दिया है? इस वीकनेस को दूर कर डालो न।

प्रश्नकर्ता : वो तो धीरे-धीरे, जैसे-जैसे आप उम्र में बड़े होते जाएँ वैसे-वैसे उस पर कंट्रोल आता रहता है।

दादाश्री : थोड़ा कंट्रोल आया है बचपन से अब तक? या बढ़ता जाता है?

प्रश्नकर्ता : सरीखा ही है।

दादाश्री : अच्छा! कम नहीं होता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, बढ़ा तो नहीं है।

दादाश्री : पुस्तकें पढ़ते हो?

प्रश्नकर्ता : खास कोई नहीं। लेकिन ज्ञान के पुस्तक पढ़ता हूँ। उसमें ऐसा आता है कि क्रोध नहीं करना चाहिए, ऐसा सब।

दादाश्री : वे किसकी पुस्तकें हैं? किसकी लिखी हुई हैं?

प्रश्नकर्ता : ऐसे सामान्य सब मुनिओं के जो प्रवचन होते हैं, वे।

दादाश्री : लेकिन फिर क्रोध-मान-माया-लोभ जाते नहीं हैं? मुनी से पूछा नहीं कि, ‘आपने किस तरह निकाला आपका क्रोध? क्रोध निकालने का मुझे कोई रास्ता दिखाइए न!’

प्रश्नकर्ता : एक से मैंने पूछा, तो उन्होंने ऐसा कहा कि ‘सिनेमा नहीं देखने हैं, नाटक नहीं देखने हैं।’ लेकिन वो तो कहते हैं, किन्तु ऐसा होता नहीं है न!

दादाश्री : फिर, खाने को कहते हैं? खाना, ऐसा कहते हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वो तो (कहते हैं कि) सब सामान्य खुराक लेनी चाहिए। मतलब, जो मुझ से हो नहीं सकते, ऐसे सारे उपाय।

दादाश्री : लेकिन तूने महाराज से पूछा नहीं कि, ‘क्या आपके (कषाय) गए हैं? आप मुझे वो रास्ता दिखालाइए, आप क्या (उपाय) करते हो?’

प्रश्नकर्ता : उनके गए होंगे ऐसा मैंने मान लिया है, मैंने पूछा नहीं है ऐसा।

दादाश्री : बराबर है। अपने लोग तो ढीले हैं न! स्वभाव से ही ढीले।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन ऐसा कैसे पूछ सकते हैं?

दादावाणी

दादाश्री : ऐसा है न, 'आपके क्रोध-मान-माया-लोभ गए हों, तो मुझे रास्ता दिखाओ तो सच्चा। बाकी, यदि आपके गए नहीं हों तो वो रास्ता आप कर लो न! फिर मुझे किसलिए दिखाते हो?'

प्रश्नकर्ता : वे प्रवचन में कहते हैं इसलिए उसका अर्थ ऐसा ही हुआ न कि उनके गए ही होंगे?

दादाश्री : किसी भूत को वश किया हो न, तो वो आकर हमारा काम भी करे, लेकिन इस क्रोध को वश करके क्या करना है?

प्रश्नकर्ता : क्रोध को इसलिए वश करना चाहिए क्योंकि जो काम हम शांति से कर सकते हैं, क्रोध के द्वारा वे सारे डिस्टर्ब हो जाते हैं।

दादाश्री : दूसरों काम करते हों वे डिस्टर्ब नहीं करते?

प्रश्नकर्ता : हाँ, इसलिए क्रोध को वश करना चाहिए।

दादाश्री : कौन-से टाइम पर क्रोध होता है?

प्रश्नकर्ता : हमारी इच्छा के विरुद्ध का कोई भी करता है तो क्रोध उत्पन्न होता है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन इस मकान पर से खपरैल गिरे सिर पर और खून निकला, तो आपकी इच्छा के विरुद्ध हुआ तो उस घड़ी पर क्रोध आता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, मतलब, किसीने ठीक से रखा नहीं होगा ऐसा करके दो सुना देते हैं।

दादाश्री : ऐसा? फिर भी दो सुना देते हो? और यदि यहाँ से आप जा रहे हों और पहाड़ पर से पत्थर लुढ़ककर (सिर पर) गिरे, और खून निकलने लगा तो?

प्रश्नकर्ता : तब भी कुछ ऐसे, एबनोर्मालिटी आती है, असर-उद्वेग होता है।

दादाश्री : उद्वेग होता है, लेकिन क्रोध तो नहीं होता न?

प्रश्नकर्ता : तब उस समय अपनी गलती होती है इसलिए हम अपने पर निकालते हैं।

दादाश्री : हम अपने पर निकालते हैं! (लेकिन गुस्सा) किए बगैर नहीं रहते।

दुःख का कारण अंतःशत्रु ही

प्रश्नकर्ता : तो ये जो काम-क्रोध होते हैं, उनसे क्या नुकसान होता है? उनकी जरूरत नहीं है?

दादाश्री : काम-क्रोध सब दुःख देते रहते हैं। बहुत दुःख देते हैं। उनकी जरूरत तो, ऐसा है कि संसार मनुष्य को अच्छा लगता हो तब तक उनकी जरूरत है। लेकिन उसे दुःख सहन नहीं होता हो, तो काम-क्रोध ही दुःख देनेवाले हैं, बाहर कोई दुःख देता नहीं है। ये खुद के अंतरशत्रु ही दुःख देते हैं। ये षड्रिपु, वे ही दुःख देते हैं। वे यदि अलग हो गए उससे, तो निबेड़ा आ गया।

यह मैं देखता हूँ न, मुझे कोई बाहर दुःख नहीं देता। षड्रिपु भीतर थे, तब तक दुःख देते थे। अब भीतर उन लोगों ने सबकुछ बंद कर दिया, सब अपने-अपने गाँव चले गए।

राग-द्वेष यानी स्वार्थ

घर में अकुलाहट होती है, उसका क्या कारण है? तब कहे, पति ऐसा है? नहीं। तब कहे, पत्नी ऐसी है? नहीं। राग-द्वेष हैं, इसलिए दुःख होता है। राग-द्वेष नहीं हो तो किसीके साथ टकराव ही नहीं होता। राग-द्वेष हैं, खुद को। राग-द्वेष अर्थात् स्वार्थ। अपने-अपने स्वार्थ में पड़ना, वह है राग-द्वेष। मुझे स्वार्थ की है कोई झंझट किसीके साथ? मुझे कुछ चाहिए ही नहीं, तो कोई झंझट नहीं। ये तो एक रसास्वाद चखने के लिए झंझट, झंझट, झंझट, और फिर चखकर यदि हमेशा के लिए सुखी हो जाते हों तो भी अच्छा है। लेकिन, ये तो चखा फिर भी क्लेश, क्लेश। सच कहना, क्लेश है या नहीं, चखा फिर भी?

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : होता है, एकदम सत्य है!

दादाश्री : ये सब राग-द्वेष के कारण है। पत्नी का भी दोष नहीं है, पति का भी दोष नहीं है। अच्छे मनुष्यों के बीच भी झगड़े होते हैं। उसका क्या कारण है? राग-द्वेष। और यदि वीतरागतापूर्वक हो फिर तो झगड़ा ही नहीं होता। लेकिन ऐसा तो कब होता है? आत्मज्ञान सहित हो, तब।

बाहर मौन, भीतर मोकाण (कषाय)

प्रश्नकर्ता : कोई गुस्सा करता हो और (हमने) मौन लिया हो, तो उस समय तो बोला ही नहीं जाता न! मतलब क्रोध नहीं होता न?

दादाश्री : लेकिन वो भीतर गुस्सा करता रहता है न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन वाणी से जो कर्म बँधते हैं, वे तो अटक गएँ न?

दादाश्री : भीतर गुस्सा करता है न, इसलिए कोई कर्म अटकता नहीं, कुछ अटकता नहीं। ये अज्ञानी जो करता है न, वो सबकुछ वैसे का वैसे, अंधेरे में जाता है।

प्रश्नकर्ता : मौन से स्थूल तो अटकता है न!

दादाश्री : लेकिन भीतर तो कषाय में ही रहता है न!

प्रश्नकर्ता : मगर यदि बोलें तो ज़्यादा असर करता है। आवेश आए, तब शायद बोल डालें तो ज़्यादा असर करता है, और मौन से वैसे असर तो नहीं होता न?

दादाश्री : ऐसे (असर) नहीं होता, असर होना अटक जाता है। लेकिन अंदर ही अंदर वह दाँव-पेंच करता रहता है। बोलें तो सामनेवाले को तुरन्त असर होता है। लेकिन अंदर वह जो चलता रहता है, उसका नहीं चलता न! वैसे, बोलें तो शोला भड़क उठा कहलाता है। इसलिए वहाँ पर बोलने के बजाय मौन

अच्छा है। कुछ भी बोलें और उल्टा हो जाए, उसके बजाय नहीं बोलें तो अच्छा है। एक दिन के लिए तो सीधा रहा। और मौन रहे, इसलिए लोगों को उलाहना तो नहीं दे, भौंकता तो नहीं रहे न। यानी सिर्फ *तंतीली* (वैखरी) वाणी बंद होती है। दूसरा सबकुछ अंदर चलता ही रहता है। ऐसे मौन रखे और भीतर तो गालियाँ भी देता है।

योग्यता होती नहीं और बगैर काम के सभी में बोलते रहें, उसका क्या अर्थ है? क्या सभी बाबत में मनुष्य की योग्यता होती है? एकाध बाबत में कभी होती है मनुष्य को। फिर बड़े लोग बोलें वो बात अलग है। व्यवहार में, बड़े लोग होते हैं, उन्हें तो कोई डाँटनेवाला नहीं होता। लेकिन हमें तो आगे बढ़ना है न! इसलिए जिसे आगे बढ़ना है, उसे तो पूरा मौन हो जाना चाहिए। जितना मौन को समझेगा, उतनी बुद्धि ठिकाने आएगी। जो सेन्सिटिव होते हैं, उन्हें मौन रखने की जरूरत है।

डराने से नहीं सुधरता कोई

प्रश्नकर्ता : घर में या बाहर किसी जगह कपट होता हो, तो डराना पड़ता है न?

दादाश्री : हमारे डराने से यदि सामनेवाले का कपट मिट जाता हो तो डराना चाहिए, लेकिन कपट हमेशा रहता हो तो डराने का कोई फ़ायदा नहीं है। आपको डराना आता नहीं है, इसलिए आपको जेल में डाल देना चाहिए कि, 'क्यों इन्हें डराया?'

प्रश्नकर्ता : डराना नहीं, तो और क्या करना?

दादाश्री : वह किस तरह सुधरे वो देखना है।

प्रश्नकर्ता : हमारे साथ कोई कपट करे तो स्वाभाविक तौर पर उस पर गुस्सा तो आ जाता है न?

दादाश्री : पाँच बार गुस्सा करने से उसका कपट यदि चला जाता हो तो ठीक है, और नहीं जाता हो तो आपको जेल में डाल देना चाहिए। इस दवाई

दादावाणी

से उसे ठीक नहीं हो रहा है! उल्टा, ऐसी दवाई पिलाकर उसे मार डालते हो!

प्रश्नकर्ता : वह मनुष्य वैसा ही रहता है, फिर उसका उपाय क्या करना चाहिए?

दादाश्री : आपका ये उपाय नुकसानदायक है। ऐसा उपाय नहीं होता। ये तो एक तरह का 'इगोइज्जम' है। 'मैं इसे ऐसे सुधारूँ, वैसे सुधारूँ', ये 'इगोइज्जम' है। हम क्या कहना चाहते हैं, कि पहले तू सुधर। सिर्फ आप ही बिगड़े हुए हो। वे तो सुधरे हुए ही हैं! आप, सबको डराकर परेशान कर डालते हो, ये आपको शोभा नहीं देता।

प्रश्नकर्ता : तो फिर क्या करना चाहिए?

दादाश्री : खुद में बदलाव लाना है। खुद ऐसे बन जाएँ कि कभी भी कोई उसके साथ कपट करे ही नहीं। मेरे साथ कोई कपट करता ही नहीं है। अपने मन में कपट हो, तो ही सामनेवाला मनुष्य कपट करता है और अपने मन में कपट नहीं हो, तो कोई कपट करता ही नहीं! अपना ही फोटो है यह सारा!

प्रश्नकर्ता : अपना लेन-देन होगा, इसलिए सामनेवाला कपट करता है?

दादाश्री : हिसाब को तो हम 'लेट गो' करते हैं। हिसाब को टाल सकें ऐसा नहीं है। हिसाब है, तभी तो (यह) मुझे मिला, उसे भी टाल नहीं सकते।

समझाकर लाओ हल

आपसे कोई भी फेरफार हो सके ऐसा नहीं है। चिल्लाने का अर्थ ही क्या है? उसका कपट तो वैसे का वैसे ही रहता है। उल्टे वो तो बढ़ाता जाता है। आप उस पर चिल्लाओ तो वह मन में कहेगा कि 'इनमें कोई योग्यता है नहीं और फ़ालतू ही चिल्लाते हैं!' मतलब, वह अपनी भूल बढ़ाता ही रहता है और आपको अनसुना कर देता है!

प्रश्नकर्ता : उसका रास्ता क्या है?

दादाश्री : उस पर अपना ऐसा प्रभाव पड़ना चाहिए कि वह कपट करे ही नहीं। हमें ये दूसरे रास्ते अपनाने की ज़रूरत नहीं है। गुस्सा करते हो, उसके बजाय मौन रहो न। गुस्सा, वह हथियार नहीं है।

प्रश्नकर्ता : कपट से कोई व्यक्ति माल चुराता हो तो हम देखते रहें?

दादाश्री : उसके लिए गुस्सा, वह हथियार नहीं है। किसी और हथियार का इस्तेमाल करो न! उन्हें बिठाकर उन्हें समझाना चाहिए, उन्हें सोचने के लिए कहें, तो सब ठिकाने पर आ जाता है।

लोगों के मुँह पर ताले मार सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : कोई हम पर क्रोध करे, और हम उसे यों ही जाने दें तो वह ऐसा कहेगा कि 'यह तो एकदम ढीला है।'

दादाश्री : तो फिर मारना उसे, बहादुरी दिखाना। मुंबई शहर में (लूटेरे) मिलते हैं, गाड़ी से उतारकर कहे, 'जो है वह सबकुछ दे दो', तब वहाँ पर बहादुरी दिखाते हैं? क्या होता है? लोग तुरन्त दे देते हैं। क्यों बहादुरी नहीं दिखाते? जगत् सारा ढीला ही है न! वहाँ पर तो, कलेक्टर हो, वो भी दे देता है। वैसे तो रौब मारता हो। बड़ा मजिस्ट्रेट हो, वो भी दे देता है। ढीला ही है सारा जगत्। आप ढीले हो, ऐसा कहते हैं?

प्रश्नकर्ता : ये तो मैं आपसे अनुभव की बात कहता हूँ। हमने समभाव से निकाल करने का नियम रखा हो इसलिए हम सबकुछ लेट गो करते हैं, तो कोई कहेगा, 'चंदूभाई ढीला पड़ गया।'

दादाश्री : लोग तो कहते हैं। अज्ञानी जो चाहे बोलें। मोक्ष में जाना हो तो लोगों की बात सुनकर घबराना नहीं चाहिए।

किसका धार्यु होता है!

प्रश्नकर्ता : घर में या बाहर, फ्रेन्ड्स में, सभी

दादावाणी

जगह हर एक के मत अलग-अलग होते हैं, और फिर हमारी धारणा अनुसार नहीं होता तो फिर हमें क्रोध क्यों आता है? तब क्या करना चाहिए?

दादाश्री : सभी व्यक्ति अपनी धारणा के अनुसार करने जाएँ, तो क्या होगा? ऐसा विचार ही क्यों आता है? तुरन्त ही ऐसा विचार आना चाहिए, कि सभी यदि उनकी (अपनी) धारणा के अनुसार करने जाएँगे, तो यहाँ पर बर्तन आपस में टकराते ही रहेंगे और खाना नहीं बचेगा। इसलिए धारणा के अनुसार कभी भी नहीं करना चाहिए। धारणा ही मत करना, इसलिए गलत होगा ही नहीं। जिसे गरज होगी वह धारणा करेगा, ऐसा रखना है।

प्रश्नकर्ता : हम चाहे जितने ही शांत रहें, लेकिन पुरुष क्रोध करें तो हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : वह क्रोध करे और लडाई-झगड़ा करना हो तो हमें भी क्रोध करना चाहिए, वना ऐसा नहीं करना चाहिए। फिल्म बंद करनी हो तो शांत हो जाना चाहिए। फिल्म बंद नहीं करनी हो तो सारी रात चलने देना चाहिए, कौन मना करता है? पसंद है क्या, फिल्म?

प्रश्नकर्ता : नहीं, फिल्म पसंद नहीं है।

दादाश्री : क्रोध करके क्या करना है? वो व्यक्ति खुद क्रोध करता नहीं है, ये तो मिकेनिकल एडजस्टमेन्ट क्रोध करता है। इसलिए खुद को फिर मन में पछतावा होता है कि 'क्रोध नहीं किया होता तो अच्छा था।'

समता वही उपाय

दादाश्री : क्या एक भी बेटा तंग नहीं करता? बेटा तंग करता है?

प्रश्नकर्ता : वो तो सब चलता रहता है, संसार है, इसलिए।

दादाश्री : नहीं, ऐसे चलता रहे उसमें हर्ज

नहीं है। वो तंग करता हो उस समय आपको क्या भाव उत्पन्न होता है भीतर?

प्रश्नकर्ता : क्रोध हो जाता है।

दादाश्री : फिर पति के साथ झंझट होती है तब क्या होता है? पति के साथ झंझट में, बर्तन तो टकरा जाते हैं न?

प्रश्नकर्ता : भीतर क्रोध होता है, लेकिन बाहर समता रखनी पड़ती है।

दादाश्री : चाहे भीतर में, लेकिन क्रोध तो हुआ न? बाहर से यदि समता नहीं रखे तो फिर मारामारी हो जाए। वो भी लकड़ी लेकर आए और ये भी लकड़ी लेकर! बाहर से समता तो रखनी ही पड़ती है न? नहीं तो पुलिसवाले आ जाए। फिर पुलिसवाले कहेंगे, 'क्या हो रहा है तुम्हारे यहाँ?'

प्रश्नकर्ता : ऐसा कोई बड़ा वाक्या नहीं होता।

दादाश्री : क्रोध, वह तो निर्बलता है। फिर भी स्त्रियों को क्रोध देर से आता है और पुरुषों को क्रोध जल्दी आ जाता है। तो क्या पुरुष ज्यादा निर्बल हैं? तब कहे, नहीं, पुरुष ज्यादा निर्बल नहीं हैं। स्त्रियाँ ज्यादा निर्बल हैं, क्योंकि स्त्रियाँ ज्यादा अजागृत हैं। पुरुष, जागृत होने के बावजूद निर्बल है। और वह जागृति संपूर्ण बढ़ जाए, मतलब फिर वो निर्बलता खतम हो जाती है। जागृति की ही जरूरत है। स्त्रियाँ तो स्वाभाविक तौर पर अजागृत ही होती हैं। पुरुष को तो जागृति ज्यादा होती है, इसलिए पुरुष बहुत अकुला जाता है।

गरम हो, उसका आकार बना सकते हैं

प्रश्नकर्ता : मेरी सहेली ने प्रश्न पूछने को कहा है, कि उसके पति हमेशा उस पर गुस्सा होते हैं तो उसका क्या कारण होगा?

दादाश्री : अच्छा है, लोग गुस्से करें उसके बजाय पति करता है वो अच्छा है। घर का ही व्यक्ति है न!

दादावाणी

ये लुहार जो होते हैं, वे, मोटा लोहा हो और उसे मोड़ना हो तो गरम करते हैं, किसलिए करते हैं? ठंडा हो तो मुड़ता नहीं, इसलिए लोहे को गरम करके फिर मोड़ते हैं। गरम करने के बाद दो हथौड़े मारने से मुड़ जाता है। हमें जैसा बनाना हो न वैसा बन जाता है। हर एक वस्तु, गरम हो जाए, फिर मुड़ती ही है हमेशा। जितनी गरमी उतना कमजोर और कमजोर मतलब एक-दो हथौड़े मारे कि, उस पति की जैसी डिज़ाइन हमें चाहिए, वैसी डिज़ाइन कर देनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन सामने हम भी गुस्सा हो जाएँ तो डिज़ाइन नहीं बनती न!

दादाश्री : हमें गुस्सा होने की क्या ज़रूरत है? वर्ना हमारी डिज़ाइन कर डाले, उसके बजाय हमें....

प्रश्नकर्ता : कैसी डिज़ाइन करनी चाहिए, दादाजी?

दादाश्री : हमें जैसी बनानी हो वैसी बनती है डिज़ाइन। अपने पति को तोते जैसा बना देती है। 'आया राम' पत्नी बोलेगी, तब वो भी कहेगा, 'आया राम'। 'गया राम' तब कहे, 'गया राम', ऐसा तोते जैसा बन जाएगा, लेकिन लोग हथौड़े मारना जानते नहीं हैं न! वो सब कमजोरी है। गुस्सा हो जाना, वे सारी कमजोरियाँ हैं।

प्रश्नकर्ता : अब रास्ता खुला कर दिया।

दादाश्री : अब अच्छा रास्ता बता दिया। हाँ, यदि वे जान-बूझकर गरम होते हों तो बिना वजह वहाँ पर हम क्यों क्लेश करें? लुहार के बिना गरम किए ही, यदि लोहे की छड़ (अपने आप) गरम होती हो, तो लुहार को तो अच्छा है। फिर दो हथौड़े ठोके इसलिए छड़ मुड़ जाती है, डिज़ाइन में (जैसी चाहिए वैसी) आ जाती है! फिर हमें कहना भी चाहिए कि, 'दादाजी ऐसा कायदा बताते थे। इसलिए, गरम

होंगे तो आपको मुड़ना पड़ेगा। उसके बजाय सीधे रहो न', ऐसा कहना।

प्रश्नकर्ता : यदि वैसा कहें न तो वे ऐसा कहेंगे कि, 'क्या मैं तेरा गुलाम हूँ?' ऐसा सुनने को मिलता है।

दादाश्री : 'नहीं गुलाम नहीं, आप मेरे बोस हो', ऐसा कहना। 'लेकिन मैं आपकी डिज़ाइन बना डालूँगी', कहना।

लोहे को गरम करने के बाद एकाध हथौड़ा मारते हैं, बस। दूसरा क्या चाहिए और! जो गरम हुआ हो वो मुड़ता है। जो गरम होता है न वह नरम होता है और नरम होता है इसलिए मुड़ता है।

गाड़ी गरम होती है, वहाँ क्या करते हैं?

प्रश्नकर्ता : कोई गुस्सा करे तो हमें क्या करना चाहिए? कुछ नहीं? या गुस्सा होना ही नहीं चाहिए?

दादाश्री : बस में बैठते हैं, वेन में बैठते हैं, उस समय वह गुस्सा करती है। गरम हो जाती है। तो हम क्या करते हैं?

प्रश्नकर्ता : कुछ नहीं।

दादाश्री : वैसे ही! ये वेन गरम हो गई है।

प्रश्नकर्ता : मुझ पर कोई गुस्सा करता है तो मुझे अच्छा नहीं लगता और मैं उल्टा वापस गुस्सा करता हूँ।

दादाश्री : तू भी करता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ। यानी मन में तो बहुत हो जाता है।

दादाश्री : मतलब, फिर दोनों को देखते रहना है। कि ये गाड़ी भी गुस्सा हुई और वो गाड़ी भी गुस्सा हुई।

गाड़ी गरम हो जाए तो क्या करते हैं हम?

प्रश्नकर्ता : कुछ नहीं करते, हम देखते रहते हैं।

दादावाणी

दादाश्री : बस फिर। ये सारी गाडियाँ अंदर घूम रही हैं। और, जो गाड़ी के साथ एक नहीं हुआ है, वह गरम नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : उसे ठंडा करने का उपाय क्या है?

दादाश्री : वह तो मशीन गरम हुआ होता है, उसे ठंडा करना हो तो थोड़ी देर ऐसे ही रहने दें, तो अपने आप मशीन ठंडा हो जाता है। और हाथ लगाएँ और कोहनी मारें तो जल मरें हम।

उससे फ़ायदा क्या?

दादाश्री : कभी किसी दिन गलती निकालते हो उसकी? या हररोज़ निकालते हो?

प्रश्नकर्ता : हररोज़।

दादाश्री : भूल नहीं निकालनी चाहिए। ऐसे कहीं भूल निकालते हैं? कोई मित्र हो, उसकी बहुत भूल निकालें तो मित्रता टूट जाती है।

प्रश्नकर्ता : ये तो मित्र नहीं है न, ये तो पत्नी है।

दादाश्री : यानी खूँटे से बंधी हुई है, इसलिए। और वो मित्र खूँटे से बंधा हुआ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : एक बार एक भूल करे तो चला लेते हैं, और दूसरी बार जब वही गलती दोहराए तो फिर वहाँ पर गुस्सा आ जाता है।

दादाश्री : आप गुस्सा होते हो न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : लेकिन भूल वो करती है और आप किसलिए कमज़ोर होते हो? भूल वो करती है और कमज़ोर आप होते हो?

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन भूल की वजह से हम सबको सहन करना पड़ता है।

दादाश्री : किन्तु कमज़ोर किस लिए होते हो

आप? हमें गुस्सा नहीं करना चाहिए और देखते रहना चाहिए, इसलिए उसे मन में भय लगता है कि 'ये देखो, बोलते नहीं हैं! कितने अच्छे व्यक्ति हैं! ऐसा पति फिर से नहीं मिलेगा! हे भगवान, ऐसे पति सात जन्मों तक देना', वो ऐसा कहेगी।

फ्रेन्डशीप रखकर टालो क्रोध

प्रश्नकर्ता : हम क्रोध किस पर करते हैं, ऑफिस में सेक्रेटरी पर क्रोध नहीं करते और होस्पिटल में नर्स पर नहीं करते लेकिन घर में वाइफ पर हम क्रोध करते हैं।

दादाश्री : इसलिए तो मैं लोगों को कहता हूँ, सबको कहता हूँ, कि वहाँ पर जब बोस झिड़काता हो, या फिर कोई दूसरा डाँटता हो, उन सबका क्रोध वे लोग घर में वाइफ पर निकालते हैं। इसलिए मुझे कहना पड़ता है कि 'अरे मुआ, पत्नी को किसलिए डाँटते हो, बेचारी को! बिना वजह पत्नी को डाँटते हो! बाहर कोई झिड़काए तो उसके साथ लड़ो न, यहाँ किसलिए लड़ते हो बेचारी के साथ!'

ये तो सारा दिन क्रोध करता है। गाय-भैंस अच्छी, क्रोध नहीं करती। कुछ शांतिवाला जीवन तो होना चाहिए न! कमज़ोरीवाला नहीं होना चाहिए। किन्तु क्रोध तो बार-बार हो जाता है! आप गाड़ी में आए न? वह गाड़ी यदि सारे रास्ते क्रोध करे तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : तो आ ही नहीं सकते यहाँ पर।

दादाश्री : तो फिर, आप क्रोध करो तो किस तरह उसकी (पत्नी की) गाड़ी चलती होगी? तुम तो क्रोध नहीं करती हो न?

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी हो जाता है।

दादाश्री : और यदि दोनों को हुआ तो फिर रहा ही क्या?

प्रश्नकर्ता : पति-पत्नी के बीच थोड़ा क्रोध तो होना ही चाहिए न?

दादावाणी

दादाश्री : नहीं, ऐसा कोई नियम नहीं है। पति-पत्नी में तो बहुत शांति रहनी चाहिए। दुःख हो, वे पति-पत्नी ही नहीं होते। सच्ची फ्रेन्डशीप में दुःख होता नहीं है। और ये तो सबसे बड़ी फ्रेन्डशीप कहलाती है! यहाँ क्रोध नहीं होना चाहिए, ये तो लोगों ने (ऐसा मन में) बिठा दिया है। खुद को होता है इसलिए ऐसा बिठा दिया है कि 'नियम ऐसा ही है', कहते हैं! पति-पत्नी में तो बिलकुल दुःख नहीं होना चाहिए, दूसरी सभी जगह पर होता है।

गुस्से से फ़ायदा क्या?

घर में गुस्सा करके क्या फ़ायदा है? घर के लोग तो अच्छा-अच्छा बनाकर खिलाते हैं। वहाँ गुस्सा करना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : ये सब मैं समझता हूँ लेकिन फिर भी होता हो तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : घर में पत्नी से कहना कि 'गुस्सा करूँ तब तीन दिन तक मुझे खाना मत देना।' आज जिस पर गुस्सा किया, उससे क्या फ़ायदा हुआ, इसका हिसाब निकाले तो दूसरे दिन कम हो जाता है। वाइफ कहे कि 'बच्चों पर गुस्सा मत होना', तो पति कहे कि 'बच्चों पर गुस्सा करना ही चाहिए', इसलिए गुस्सा बढ़ता है। सोचने से गुस्सा जाता है।

सामने से कोई उल्टे रास्ते से आ रहा हो तो गाड़ी को टकराने नहीं देते न, पक्का! अर्थात् गाड़ी टकराना और क्रोध करना, दोनों समान ही है। गाड़ी टकराने का फल आँखों से दिखता है। और क्रोध का फल दिखता नहीं है, इसलिए मन में ऐसा होता है कि 'उसमें क्या हो गया?' मुआ, वह बीज उगेगा न, तब पता चलेगा। गुस्सा करना, उसके जैसा दूसरा भयंकर कर्म नहीं है। और यदि वह कहे कि 'मुझे गुस्से की आदत हो गई है', तो फिर जब ऊपर से पत्थर गिरता है तो वहाँ पर गुस्सा क्यों नहीं करता? पुलिसवाले के साथ क्यों नहीं करता? पुलिसवाला कहे 'खडे रहो।' मतलब, यदि गुस्सेवाला ऐसे बहाना

बनाता हो तो उसे बाँधकर रखना चाहिए। एक खंभे से बाँधकर बारह घंटों तक अकेला रखना, बगैर चाय-पानी के.... फिर उसकी समझ में आएगा कि क्रोध का फल ऐसा मिलता है।

मनाकर भी, टालो क्रोध को

एक पहचानवाले थे, मेमार का काम करते थे। वे मुझे हमेशा कहते थे, 'साहब मेरे यहाँ एक बार आइये न!' एक बार वहाँ से गुज़र रहा था तब मिल गए, तो कहते हैं, 'चलो मेरे यहाँ थोड़ी देर के लिए।' इसलिए वहाँ उनके घर गया। तब मैंने कहा, 'अरे, दो रूम (कमरों) में तेरा गुज़ारा हो जाता है।' तब वो कहते हैं, 'मैं तो मेमार हूँ न!' यह तो मेरे समय की, यानी उस ज़माने की बात करता हूँ। अभी तो एक रूम में रहना पड़ता है, लेकिन उस ज़माने में भी दो रूम बेचारे को थी! फिर मैंने कहा, 'बीवी परेशान नहीं करती न तुम्हें?' तब कहते हैं, 'बीवी को तो क्रोध आ जाता है, लेकिन मैं क्रोध नहीं करता।' मैंने कहा, 'ऐसा क्यों?' तब कहते हैं, 'वह यदि क्रोध करें और मैं भी क्रोध करूँ, फिर इन दो कमरों में वो कहाँ सो जाए और मैं कहाँ सो जाऊँ? वो उल्टा घूमकर सो जाए, और मैं उल्टा घूमकर सो जाऊँ। फिर तो सुबह चाय भी अच्छी नहीं मिलेगी मुझे। वो ही मुझे सुख देनेवाली है, उसके कारण सुख है मेरा!' मैंने कहा, 'बीवी कभी क्रोध करे तो?' तब कहते हैं, 'उसे मना लेता हूँ, 'अरे जाने दे न! मेरी हालत मैं जानता हूँ।' ऐसा-वैसा करके मना लेता हूँ। लेकिन उसे खुश रखता हूँ। बाहर मारकर आता हूँ, लेकिन घर में नहीं मारता।' और लोग तो बाहर मार खाकर आते हैं और घर में मारते हैं।

सीधा करना या सीधा होना!

हर एक बात में हम सामनेवाले को 'एडजस्ट' हो जाएँ तो कितना सरल हो जाए। हमें साथ में क्या ले जाना है? कोई कहेगा कि, 'भाई, उसे सीधी करो।' 'अरे, उसे सीधी करने जाएगा तो तू टेढ़ा हो जाएगा।'

दादावाणी

इसलिए 'वाइफ' को सीधा करने मत जाना, जैसी हो उसे करेक्ट कहें। हमारी उसके साथ हमेशा की साझेदारी हो तो अलग बात है, लेकिन ये तो एक जन्म के बाद तो कहीं के कहीं बिछड़ जाएँगे। दोनों के मृत्यु का समय अलग, दोनों के करम अलग! कुछ लेना भी नहीं और देना भी नहीं! यहाँ से वो किसके घर जाएगी उसका क्या पता? हम सीधी करें और अगले जन्म में वो जाए किसी और के हिस्से में!

प्रश्नकर्ता : उसके साथ कर्म बँधे हुए हों तो दूसरे जन्म में मिलेंगे तो सही न?

दादाश्री : मिलते हैं, लेकिन दूसरी तरह मिलते हैं। किसी और की पत्नी बनकर अपने यहाँ बातें करने आएँ। कर्म के नियम होते हैं न! उसका तो कोई ठिकाना नहीं है। कोई पुण्यशाली व्यक्ति ही ऐसा होता है जो अमुक जन्मों तक उस पत्नी के साथ रहता है। देखो न, नेमिनाथ भगवान नौ जन्मों से राजुल के साथ ही थे न! ऐसा हो तो बात अलग है। किन्तु ये तो दूसरे जन्म का ही ठिकाना नहीं है। अरे, इस जन्म में ही चले जाते हैं न! उसे 'डायवोर्स' कहते हैं न? इसी जन्म में ही दो पति करते हैं, तीन पति करते हैं!

सीधा होने का सरल मार्ग

इसलिए आप उन्हें सीधा मत करना और उसे भी आपको सीधा नहीं करना है। जैसा मिला वैसा, सोने जैसा। प्रकृति कभी किसीकी सीधी होती नहीं। कुत्ते की दूम टेढ़ी की टेढ़ी ही रहती है इसलिए हमें सँभलकर चलना चाहिए। चाहे जैसी भी हो, 'एडजस्ट एवरीव्हेर'।

झिड़काने के समय पर आपने नहीं झिड़काया उससे 'वाइफ' ज़्यादा सीधी रहती है। जो गुस्सा नहीं करता, उसका ताप बहुत सख्त होता है। हम किसीको कभी भी डाँटते नहीं हैं, फिर भी हमारा ताप बहुत लगता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर वो सीधी हो जाती है?

दादाश्री : सीधा होने का मार्ग पहले से ही यह है। जो कलियुग में लोगों को रास नहीं आता है। लेकिन उसके बगैर चारा नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह बहुत कठिन है।

दादाश्री : नहीं, नहीं। वह कठिन नहीं है, वह आसान है। गाय के सींग गाय को भारी।

प्रश्नकर्ता : हमें भी वह मारे न?

दादाश्री : किसी दिन हमें लग जाए। सींग मारने आए तो हम खिसक जाते हैं, वैसे यहाँ पर भी खिसक जाना है! लेकिन अड़चन कहाँ आती है? "मेरी ब्याही हुई और मेरी 'वाइफ'"। अरे, नहीं है 'वाइफ'। आप 'हसबन्ड' ही नहीं हो तो फिर कैसी 'वाइफ'? ये तो अनाड़ी के खेल हैं! आर्यप्रजा कहाँ रही है अब?

कहना, किन्तु प्रेम से

प्रश्नकर्ता : घर में हमारी जिम्मेदारी होती है। घर की किसी एक व्यक्ति का कोई भी वर्तन बुरा हो तो हम उसे सुधारने के लिए कहें, उसके अच्छे के लिए उसे कहें तो उल्टा हम पर ही आ जाता है। वो खुद समझता है कि घर में ये मेरे बुजुर्ग हैं, मेरे अच्छे के लिए कहते हैं, मुझे सुधारने के लिए कहते हैं। फिर भी, जब हम कहें तब उसका वर्तन हमारे सामने उल्टा ही हो जाता है।

दादाश्री : हमें कहना नहीं आता है, इसलिए। सामनेवाले व्यक्ति की जोखिमदारी नहीं है। हमें कहना नहीं आए तब फिर तो ऐसा ही होगा न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन हर एक व्यक्ति को जो भी कहना है, वो उसकी केपेसिटि जो होती है उसके आधार पर ही कहा जाता है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन कलेक्टर की तरह कहां तो फिर वो वैसा ही करेगा न! जैसे कि आप कलेक्टर हो, उस तरह कहते हो। इसलिए ऐसा ही हो जाए

दादावाणी

न! आप कारकुन की तरह कहो, तो उसे अच्छा लगेगा। तो ही वो बात सुनेगा। आपको क्या लगता है? क्लेक्टर की तरह कहो तो बाधा ही आएगी न! इस अंगारे को हम छूए और उसे पहचान जाएँ कि इसे तो छूने जैसा ही नहीं है, तो फिर हमें फिर से उसे छूना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : नहीं, छूना नहीं चाहिए।

दादाश्री : तो फिर, अंगारे के लिए क्या करते हैं? चिमटे से फिर पकड़ते हैं न? चिमटा रखते हो न, आप? चिमटा नहीं रखते? यदि ऐसे ही अंगारा हाथ में पकड़ने जाएँ तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : जल ही जाएँगे।

दादाश्री : मतलब चिमटा रखना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : तो वो किस प्रकार का चिमटा रखना चाहिए?

दादाश्री : अपने घर में एक व्यक्ति चिमटे जैसा होता है, जो खुद जलता नहीं है और सामनेवाले को, जले हुए को सँभालता है। उसे बुलाकर कहें कि 'भाई, इसके साथ मैं बात करूँ न, तब तू उस घड़ी हाँ में हाँ मिलाना।' फिर वो ठीक कर देगा। कोई तो रास्ता निकालना पड़ता है। यों ही अंगारे को हाथ से पकड़ने जाएँ तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ये ठीक बात है। लेकिन मेरे साथ उल्टा वर्तन करने के बाद उसे दुःख होता है कि 'मैंने गलत किया है। ये घर के बड़े हैं, और उनका मुझ पर प्रेम है, इसलिए मुझे वो सुधारना चाहते हैं।' ऐसा वो समझता है, फिर भी उसका वर्तन तो वैसे का वैसे ही होता है।

दादाश्री : हाँ, प्रेम है और हित की बात करते हैं, ऐसा भी समझता है। लेकिन, 'तुझ में अक्ल नहीं है' ऐसा उसे क्यों बोलते हो? उसके साथ क्लेक्टर की तरह क्यों बोलते हो? हम तो प्रेम से कहते हैं, तो (आप भी) प्रेम लाओ न! इतने अच्छे समझदार होकर....

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? मैं उससे कुछ कहूँ तो वो गुस्सा हो जाता है। इसलिए मैं भी गुस्सा हो जाता हूँ।

दादाश्री : गुस्सा हो जाते हो, मतलब, कमजोरी हो तब तक क्या हो सकता है? मुझसे तो कोई कहे, 'दादाजी, आप में अक्ल नहीं है।' तो मैं कहता हूँ, 'तेरी बात बराबर है।' क्योंकि, उसे समझ नहीं है तब ऐसा बोलता है न! और फिर पछताता भी है। वो कहेगा कि, 'मुझे ऐसा नहीं बोलना चाहिए, फिर भी बोला गया।' ऐसे पछताता है।

असर को तो भुगतना ही पड़ेगा

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले के अच्छे के लिए गुस्सा करें तो उसका भोगवटा बहुत भुगतना पड़ता है, वह क्या है?

दादाश्री : असर को भुगतना पड़ता है न? ठंड के दिनों में यदि हम घर में पंखा चलाएँ तो क्या होगा? इलेक्ट्रिक के पैसे भरने पड़ेंगे और ठंड से मर जाएँगे सो अलग।

यानी, यह सब हमें समझना चाहिए। भोगवटा आता है, लेकिन आप ठंड से मर नहीं जाते। शांति ज़रा कम हो जाती है। मतलब, टाइम बेकार जाए, तो भी पुण्य बँधता है।

सँभालो अन्डरहेन्ड को

खुद के साथ कोई गुस्सा हुआ हो वो सहन नहीं होता और सारा दिन सब पर गुस्सा करता रहता है। तब वह कैसी अक्ल? उसे मानवधर्म नहीं कहा जाता। खुद पर कोई ज़रा-सा भी गुस्सा हुआ हो उसे सहन नहीं कर सकता, वह व्यक्ति (खुद) सारा दिन सबके ऊपर गुस्सा करता रहता है, वे लोग उससे दबे हुए हैं इसलिए न? दबे हुए को मारना, वो तो बहुत बड़ा गुनाह कहलाता है। ऊपरी (वरिष्ठ मालिक) को मारना है। भगवान को या ऊपरी को। क्योंकि ऊपरी है, शक्तिशाली है। अन्डरहेन्ड को

दादावाणी

शक्ति नहीं होती इसलिए पूरी ज़िन्दगी मारता है। अन्डरहेन्ड, चाहे कैसा भी गुनहगार हो, फिर भी मैंने उसे बचाया था। लेकिन ऊपरी तो, चाहे कितना ही अच्छा हो फिर भी मुझे ऊपरी पुसाता नहीं और मुझे किसीका ऊपरी होना नहीं है। अच्छा हो तो हमें हर्ज नहीं है। लेकिन वो हमेशा वैसा रहेगा नहीं न! एक ही बार ऐसा बोले, कि हमारे सिर में दर्द होने लगे। ऊपरी किसे कहते हैं, कि जो अन्डरहेन्ड को सँभाले! यानी, सच्चा ऊपरी वह है। मैं सच्चा ऊपरी ढूँढ रहा हूँ। मेरा ऊपरी बन, लेकिन सच्चा ऊपरी बन। हम डॉट खाने के लिए पैदा नहीं हुए हैं। तू हमें डॉटें, हम क्या उसके लिए पैदा हुए हैं? ऐसा क्या दे देनेवाला है?

आपके यहाँ कोई नौकरी करता हो तो उसे कभी भी दुतकारना मत, छेड़ना मत। सभी को आदर से रखना। क्या पता किस व्यक्ति से क्या लाभ हो जाए!

प्रेम से जीत सकोगे, कड़वाहट से नहीं

प्रश्नकर्ता : संसार में रहते हुए कितनी ही जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं और जिम्मेदारियाँ अदा करना वो एक धर्म है। वो धर्म निभाते हुए किसी कारण कभी कटु वचन बोलने पड़ते हैं, तो क्या वो पाप या दोष है?

दादाश्री : ऐसा है न, कड़वा वचन बोलें उस समय अपना मुँह कैसा हो जाता है? गुलाब के फूल जैसा, नहीं? अपना मुँह बिगड़े तो समझना कि पाप लगा। अपना मुँह बिगड़े ऐसी वाणी निकली तभी समझना कि पाप लगा। कड़वे वचन नहीं बोलने चाहिए, धीरे से, आहिस्ता से बोलो। थोड़े वाक्य बोलो, लेकिन आहिस्ता से समझकर कहो, प्रेम रखो, एक दिन जीत सकोगे। कड़वाहट से जीत नहीं सकोगे। उल्टा वो सामना करेगा और उल्टे परिणाम बाँधेगा। वो लड़का उल्टे परिणाम बाँधता है। 'अभी तो छोटी उम्र का हूँ इसलिए मुझे ऐसे झिड़काते हैं।

बड़ा हो जाऊँगा फिर दूँगा (बदला लूँगा)।' ऐसे परिणाम भीतर बाँधता है। इसलिए ऐसा मत करो, उसे समझाओ। एक दिन प्रेम जीत जाएगा। दो दिन में उसका परिणाम नहीं आएगा। दस दिन, पंद्रह दिन, महीने तक प्रेम रखते जाओ। देखो, इस प्रेम का क्या फल आता है, उसे तो देखो। आपको पसंद आई ये बात? कड़वा वचन बोलें तो अपना मुँह नहीं बिगड़ जाता?

प्रश्नकर्ता : हम अनेकबार समझाएँ, फिर भी वो नहीं समझे तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : समझाने की ज़रूरत ही नहीं है। प्रेम रखो, फिर भी हमें उसे धीरे से समझाना चाहिए। अपने पड़ोसी को भी ऐसे कड़वे वचन बोलते हैं हम?

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसी धीरज होनी चाहिए न?

दादाश्री : यदि पहाड़ पर से पत्थर गिरे और आपके सिर पर पड़े तो आप ऊपर देख लेते हो और फिर किस पर गुस्सा करते हो? उस समय शांत रहते हो न? कोई दिखता नहीं है इसलिए हम समझते हैं कि ये किसी ने डाला नहीं है और अपने आप गिरा है। इसलिए वहाँ हम गुनाह मानते नहीं है। वैसे ही, यहाँ भी अपने आप ही गिरता है। यहाँ, डालनेवाला व्यक्ति दिखता है, उतना ही है। बाकी अपने आप ही गिरता है। आपके ही सारे हिसाब चुकता हो रहे हैं। इस दुनिया में सारे हिसाब चुकता हो रहे हैं। नये हिसाब बंध रहे हैं और पुराने हिसाब चुकता हो रहे हैं। इसलिए बच्चों के साथ सीधा बोलना, अच्छी भाषा बोलना।

लाओ हल समाधानपूर्वक

प्रश्नकर्ता : कई लोगों की ऐसी बिलीफ़ होती है कि 'बच्चों को मारें तो ही वे सीधे होते हैं, वर्ना बिगड़ जाते हैं। हमें मारकर धाक में रखने ही चाहिए। तो ही बच्चे सीधे चलते हैं', क्या ये ठीक है?

दादावाणी

दादाश्री : जब तक मारने जितनी उसकी उम्र हो तब तक मारना चाहिए। यदि ३० साल की उम्र हुई और मारने जाएँ तो?

प्रश्नकर्ता : वे प्रतिकार करेंगे।

दादाश्री : इसलिए हम ऐसा कहते हैं कि मारना और ऐसा भी कहते हैं कि मत मारना। जब तक वे बरदाश्त करते हैं, ऐसा उनका अहंकार जागृत हुआ नहीं है, तब तक अंत में मारकर भी उन्हें सीधा रखना चाहिए। वर्ना उलटे रास्ते पर चले जाएँगे।

वास्तव में, सीधा करना लोगों को आता नहीं है। ऐसा ज्ञान नहीं होने के कारण आता नहीं है। वर्ना बच्चों को सीधा करने के लिए प्रेम के जैसी कोई औषधि ही नहीं है। लेकिन ऐसा प्रेम रहता नहीं है न, व्यक्ति को गुस्सा आ ही जाता है न! फिर भी, गुस्सा करके, मारकर भी उसे सुलटे रास्ते पर लाता है, ये अच्छा है। वर्ना वो उल्टे रास्ते पर चला जाए। क्योंकि उसे ज्ञान ही नहीं है। और ३० साल की उम्रवाले को मारें तो वो सामना करता है। इसलिए जब तक अपना चले तब तक कर लेना। नहीं चले तब छोड़ देना।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कहना मानते नहीं, इसलिए कभी मारना पड़ता है बच्चों को!

दादाश्री : नहीं मानते, तो मारने से क्या मान जाते हैं? वो तो मन में गाँठ रखता है कि बड़ा हो जाऊँगा तब मेरी मम्मी को देख लूँगा, कहेगा। मन में रिस रखता ही है, हर एक जीव रिस रखता ही है! खुद हमेशा समाधानपूर्वक कार्य करो, हर एक कार्य! मारना हो तो कहना, 'भाई, तू यदि कहता हो तो तुझे मारूँ, वर्ना नहीं मारूँ।' वो कहे कि, 'नहीं, मुझे मारो।' तो मारना, समाधानपूर्वक मार सकते हैं। क्या ऐसे ही मारना चाहिए? फिर तो वो बैर बाँधता है! उसे पसंद नहीं हो और आप मारो तो बैर बाँधता है। छोटा हो तब बैर नहीं बाँधता, लेकिन मन में तय करता है कि 'मैं बड़ा हो जाऊँगा तब मम्मी को मारूँगा!'

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, मेरी बेटी को तो हम डाँटे तो भी कुछ नहीं, एक ही सेकन्ड में सब भूल जाती है।

दादाश्री : भूल जाती है। मतलब उतनी चालाकी कम है। चंचलता जरा कम है, इसलिए भूल जाती है। लेकिन चंचल व्यक्ति बहुत उग्र होते हैं। इसलिए डाँटने का क्या काम है अब? डाँटना हो तो बेटे से कहना कि 'बोल, तुझे मैं डाँटूँ? ऐसा काम किया, खराब काम किया। मैं तुझे डाँटूँ?' तो वो कहे, 'हाँ, डाँटो।' तो हमें डाँटना चाहिए। वो खुश होकर डाँटने को कहे, तो हमें डाँटना चाहिए।

परिणाम आए तो कामका

प्रश्नकर्ता : हमें घर के बच्चों पर क्रोध आता है तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : नासमझी से क्रोध होता है। उससे हम पूछें कि तुझे बहुत मझा आया था? तब कहे 'मुझे बहुत बुरा लगा अंदर, अंदर बहुत दुःख होता था।' उसे दुःख होता है, हमें दुःख होता है! बच्चों पर चिढ़ने की ज़रूरत ही कहाँ रही फिर? और चिढ़ने से सुधरते हों, तो चिढ़ना चाहिए। रिज़ल्ट अच्छा आता हो, तो चिढ़ना काम का है। रिज़ल्ट ही अच्छा नहीं आता हो तो चिढ़ने का क्या मतलब है! क्रोध करने से फ़ायदा होता हो तो करना और फ़ायदा नहीं होता हो तो क्रोध किए बगैर ऐसे ही चला लेना न!

प्रश्नकर्ता : हम क्रोध नहीं करें तो वो हमारी सुनता ही नहीं, खाता ही नहीं।

दादाश्री : क्रोध करने के बाद भी कहाँ सुनता है!

बिगड़ता हो वहाँ क्या उपाय

प्रश्नकर्ता : बच्चों से कहते हैं कि सुबह जल्दी उठो, जल्दी पढ़ो। लेकिन आजकल के बच्चे सब देर से ही उठते हैं, सूर्यवंशी। अब रोज़ की ये टसल (किच-किच) घर में होती रहती है।

दादावाणी

दादाश्री : आप कितने बजे उठते हो?

प्रश्नकर्ता : मैं तो पाँच बजे उठती हूँ।

दादाश्री : और साहब?

प्रश्नकर्ता : साहब भी पाँच-साढ़े पाँच बजे।

दादाश्री : अच्छा! तो फिर अब उनको, बच्चों को समझा-बुझाकर काम लेना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : बेटा दस बजे तक सोता रहता है, तो मुझे गुस्सा आता है और उसे (गुस्सा को) मैं ठीक मानता हूँ!

दादाश्री : हाँ, लेकिन गुस्सा आए तो फिर बेटा मानेगा नहीं, यदि गुस्सा नहीं आता हो तो बेटा आपकी बात मानेगा। आपकी कमजोरी देखता है इसलिए बेटा समझता है कि इनका स्वभाव ही ऐसा है, विचित्र स्वभाववाले हैं और बाहर लोगों से कहता भी है कि, 'मेरे फादर इतने विचित्र स्वभाव के हैं, बात बात में चिढ़ते रहते हैं!' मतलब, बाप प्रभावशाली होना चाहिए! बाप यदि बेटे के साथ गुस्सा नहीं करे न, तो बेटा बाप के कहे अनुसार चलेगा ही! ये तो गुस्सा होता है, उस कमजोरी को देखता है इसलिए भड़कता है कि 'ये मैं यहाँ कहाँ फँस गया! ऐसे माँ-बाप क्यों मिले!' ऐसा सब घुसता है मनमें! बच्चे मुझसे कहते हैं कि 'हमारे माँ-बाप तो बिलकुल कंडम (बेकार) हैं!' हमें ऐसे नहीं रहना चाहिए। हमें बिलकुल करेक्ट, मतलब कमजोरी उत्पन्न नहीं हो। यदि कमजोरी उत्पन्न होती हो, तो उसके बजाय उनको कुछ नहीं कहना अच्छा है। एक जगह पर बैठे रहना। और कहने से सुधरता नहीं है। कमजोरी हो तब तक सुधरता ही नहीं। तब तक तो वो, आपको दिखाने की खातिर करता है। बाद में मन में उल्टा भाव करता है।

प्रश्नकर्ता : समाज की व्यवस्था भी सँभालकर रखनी पड़ती है, वर्ना अव्यवस्थित!

दादाश्री : नहीं, उसे समाज की व्यवस्था

सँभालना नहीं कहा जाता। नहीं समझने के कारण खुद चाहे ऐसा बर्ताव करता है। गुस्सा करने की ज़रूरत नहीं है। समाज ऐसा नहीं कहता है कि गुस्सा करो।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मान लो कि यहाँ पर कोई गुन्डे चोरी करते हों और पुलिसवाले उन्हें दंड नहीं दें, तो ऐसा चलता नहीं है न। दंड तो देना ही चाहिए न।

दादाश्री : ऐसा तो करना ही पड़ता है। उसमें चलता ही नहीं। दंड दो उसमें हर्ज नहीं है, लेकिन गुस्सा होना, वहाँ हर्ज है। कमजोरी नहीं होनी चाहिए। मेरे कहने का मतलब है कि कमजोरी हो तो सामनेवाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं पड़ता, इसलिए कार्य होता नहीं। कोई भी कार्य, हमेशा प्रभाव से ही होता है। इसलिए हमें सोचकर (बोलना है) और कमजोरी हो तो बोलना नहीं चाहिए। कमजोरी से बच्चे बिगड़ जाते हैं। अपना आनेवाला जन्म बिगाड़ते हैं बेचारे। अभी तो हमारे कहे अनुसार दौड़ते हैं, लेकिन मन में ऐसा भाव करते हैं कि, 'अभी मुझे इतना सुनाते हैं लेकिन फिर उन्हें मैं देख लूँगा', यानी उल्टा भाव करके अपना आनेवाला जन्म बिगाड़ते हैं। अर्थात् आनेवाला जन्म नहीं बिगड़े इसलिए हमें उसे धीरे से कहना चाहिए।

कहना है राग-द्वेष रहित

प्रश्नकर्ता : तो फिर घर में अभी सब साथ में रहते हों, तो कुछ कहना नहीं है, ऐसा।

दादाश्री : नहीं, कहना है सब, किन्तु राग-द्वेष बगैर। सुबह कहें कि 'आप सब जल्दी उठो' तो क्या गलत है? तब वे कहें, 'हम जल्दी उठनेवाले नहीं हैं, ज़्यादा किच-किच मत करो।' तब कहना, 'अब किच-किच नहीं करूँगी', ऐसा कहना चाहिए हमें। लोग तो किच-किच करते हैं न!

प्रश्नकर्ता : घर में ज़्यादा बच्चे हों, स्कूल साथ में जाना होता है, नहाना-धोना होता है, और

दादावाणी

वे सब कार्य आराम से करते हैं न, तब हमें कहना पड़ता है। तब पति कहते हैं, 'तुम किसीको कुछ मत कहो।'

दादाश्री : वो तो कहना चाहिए, कहना तो पड़ता है। हिलाना तो पड़ता है। घंट (डंका) बजाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : और पति तो सुबह निकल जाते हैं और रात को आते हैं। इसलिए फिर घर में कौन आता-जाता है, खाने-पीने का, इन बातों का उन्हें कुछ पता नहीं होता। तीन गेलन तो दूध लाना होता है रोज़। इतना-सा दूध नहीं हो तो 'दूध नहीं है' ऐसा शोर मच जाता है। तब हमें कहना तो चाहिए न, इसलिए ये मुझे कहते हैं कि, 'तुम किसीको कुछ मत कहो।'

दादाश्री : नहीं, कहना चाहिए। 'नहीं कहना' वह भी गुनाह है और 'कहते रहना' वह भी गुनाह है। कहना है और राग-द्वेष नहीं रखना है।

प्रश्नकर्ता : नहीं, राग-द्वेष तो ज़रा-सा भी नहीं।

दादाश्री : 'नहीं कहना' वह एक प्रकार का अहंकार है। जो निकल जाता है, वह बोल देने के बाद वे कहेंगे, 'ऐसा क्या बोलते हो?' तब कहें, 'मेरी भूल हो गई। अब नहीं बोलूँगी।'

किच-किच से बिगड़े दोनों का

प्रश्नकर्ता : मतलब, ऐसा ही तय हुआ कि मेरा कुछ कहने का अर्थ नहीं है, उसे तो जो करना होगा वही करेगा। हमें आपका ज्ञान मिला है और समझ में आया है कि मुझे इसमें कोई दखल करने की ज़रूरत नहीं है। बेटा तो अपने रास्ते ही जानेवाला है, और जो होना होगा वही होगा। तो वो ठीक ही है न कि जैसा होना होगा वही होगा?

दादाश्री : नहीं, नहीं। ऐसा नहीं। ऐसा नहीं कहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हम बेटे से नहीं कहते। हम समझते हैं कि यह जो होता है वह व्यवस्थित है।

दादाश्री : नहीं। लेकिन हम जब तक साथ में हों, अलग हो जाने के बाद कोई हर्ज नहीं, लेकिन साथ में हों और छोटा बेटा होटल में जाता हो, और हम देखें, तो उसे ऐसा कहना चाहिए कि, 'भाई, होटल में जाने से शरीर स्वस्थ रहेगा?' ऐसा-वैसा समझाकर सब कहना चाहिए। हमारा बिगाड़ना नहीं है। उसका बिगाड़ना नहीं चाहिए। हमारा बिगड़ें, तो उसका भी बिगड़ता है। हम यदि गुस्सा करें तो पहले हमारा बिगड़ता है, फिर उसका बिगड़ता है।

लोन भरपाई किसे करनी है

दादाश्री : तुम्हें किस पर गुस्सा आता है?

प्रश्नकर्ता : कई बार मेरे बेटे पर गुस्सा हो जाती हूँ। वर्क (काम) पर गुस्सा हो जाती हूँ।

दादाश्री : काम पर, किस पर आता है?

प्रश्नकर्ता : को-वर्कर (सह-कार्यकर) के साथ।

दादाश्री : वे लोग कोई भूल करें इसलिए गुस्सा आ जाता है, हैं न!

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : रास्ते में काँटा चुभ जाए तो उस पर गुस्सा आता है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं, उस पर कैसे गुस्सा आएगा? उस पर गुस्सा नहीं आता।

दादाश्री : क्यों नहीं आता?

प्रश्नकर्ता : वह एक वस्तु है न!

दादाश्री : तो यह भी जड़ वस्तु ही है। यह भी आपको जो दिखता है वह जड़ वस्तु ही देखते हो।

और बेटे पर तो गुस्सा नहीं करना चाहिए,

दादावाणी

क्योंकि बेटे को तो हमने नौ महिने पेट में रखा था। अब इतना सारा काम किया, हेल्प की, और फिर अब गुस्सा करके क्या काम है? फिर ऐसे गुस्सा करके डेबिट किसलिए कराएँ? जब इतना सारा जमा हुआ हो तो फिर वहाँ डेबिट करने का कारण क्या है? नौ महिने कौन रखेगा, ऐसा रेसिडन्स? नौ महिने इतना उपकार किया, तो अब गुस्सा करने की ज़रूरत नहीं होती।

अंत में कहना भी छोड़ना पड़ेगा

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, पानी का प्याला ले, पानी का प्याला भरे और फिर कारपेट पर गिराए तो उसका क्या करना चाहिए? गिराने देना चाहिए?

दादाश्री : हाँ, लेकिन फिर क्या करें! वर्ना हमें क्या करना है, कि 'पानी गिराना नहीं, ये बिगड़ जाएगा, नुकसान होगा' ऐसा धीरे से बोलना है। क्रोध करने की ज़रूरत है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं, क्रोध नहीं करती दादाजी। क्रोध नहीं करती, लेकिन उसे कहना पड़ता है।

दादाश्री : कहने में हर्ज नहीं है, कहना वो तो नाटक है सारा। खुद को दुःख नहीं हो उस तरह कहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, क्रोध नहीं होता लेकिन बोल दिया जाता है।

दादाश्री : अंत में कहने का स्वभाव भी छोड़ देना पड़ेगा। अंत में तो उसे भी छोड़ देना पड़ेगा। यह आप नहीं कहते, यह तो टेपेरेकर्ड सब गाता है, आप गाते ही नहीं हैं न! आप चाहे जितना बोलो न, फिर भी आप पर गुस्सा नहीं आता, हम जानते हैं कि यह टेपेरेकर्ड गाने लगा।

प्रश्नकर्ता : दूसरे किसी को आ जाता है न गुस्सा!

दादाश्री : वह तो आ ही जाएगा न!

खुद ही सुधरने की ज़रूरत

प्रश्नकर्ता : छोटे बच्चों का गुस्सा दूर करने के लिए उन्हें संक्षेप में कैसे कहना चाहिए?

दादाश्री : उनका गुस्सा दूर करके क्या फायदा?

प्रश्नकर्ता : झगड़े नहीं हमारे साथ, इसलिए।

दादाश्री : फिर शांत हो जाते हैं वे तो। जबरदस्ती दवाई करें तब गुस्सा आता है व्यक्ति को। फिर शांत हो जाता है, शांत हो जाए वो अच्छा नहीं है, गुस्सा अच्छा है।

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं, ऐसा नहीं। बच्चे कभी बहुत होट-टेम्पर के होते हैं न।

दादाश्री : उसके लिए तो दूसरी दवाई करने के बजाय, वे उनके माँ-बाप का गुस्सा नहीं देखे उस तरह माँ-बाप को रहना चाहिए। उनका गुस्सा देखकर उसे लगता है कि 'मेरे फादर करते हैं, मैं उनसे सवा गुना ज़्यादा गुस्सा करूँ तब सही।' वो आप बंद कर दो, तो अपने आप बंद हो जाएगा।

मैंने बंद किया है, मेरा बंद हो गया है, तो कोई मेरे साथ करता ही नहीं है। मैं कहता हूँ कि 'गुस्सा करो' तो भी नहीं करते। बच्चे भी नहीं गुस्सा होते। मैं मारता हूँ फिर भी गुस्सा नहीं होते।

उसे प्रेम कहते हैं

प्रश्नकर्ता : मेरे रिश्तेदार सब प्रेमवाले हैं, मेरे लिए भावुक हैं।

दादाश्री : वो तो जब तू उल्टा जवाब देगा न तब पता चलेगा कि प्रेम कितना है।

प्रश्नकर्ता : उल्टा जवाब दूँ तो गुस्सा करते हैं।

दादाश्री : तो फिर उसे प्रेम कैसे कह सकते हैं? उसे आसक्ति कहते हैं। प्रेम तो उसे कहते हैं

कि जो बढ़े नहीं, घटे नहीं। तुम गाली दो, गुस्सा करो फिर भी कम नहीं होता और ऐसे ही प्रेम करो तो भी बढ़ता नहीं, उसे प्रेम कहा जाता है। इसे प्रेम कैसे कहा जाए? और मैं तो प्रेम से मारता हूँ।

प्रश्नकर्ता : मुझे दुःख नहीं होता। मुझे गुस्सा आता है, थोड़ा अंदर असर होता है, लेकिन फिर मैं सोचकर उसे भूल जाने का प्रयत्न करता हूँ।

दादाश्री : नहीं। लेकिन गुस्सा आए वहीं से दुःख कहा जाता है न! उसे द्वेष कहा जाता है। प्रेम में द्वेष नहीं होता। द्वेष है वहाँ प्रेम नहीं है और प्रेम है वहाँ द्वेष नहीं होता! प्रेम में राग भी नहीं होता और द्वेष भी नहीं होता। अभी तुम मुझे फूलहार चढ़ाओ तो मेरा प्रेम बढ़ नहीं जाएगा, तुम मुझे दो धौल मारोगे तो घट नहीं जाएगा, उसे प्रेम कहते हैं। ऐसा प्रेम देखा है?

सच्चा प्रेम नहीं बढ़े, नहीं घटे

प्रश्नकर्ता : तो माता-पिता का जो प्रेम है, वो कैसा कहा जाता है?

दादाश्री : माता-पिता को एक दिन गालियाँ दें न तो फिर वे विरोध करेंगे। ये 'वर्ल्डली' (सांसारिक) प्रेम तो टिकता ही नहीं न! पाँच साल में, दस साल में भी फिर उड़ जाता है किसी दिन। सच्चा प्रेम होना चाहिए। बढ़े-घटे नहीं ऐसा प्रेम होना चाहिए।

फिर भी बच्चों पर पिता कभी जो गुस्सा करते हैं, उसमें भीतर हिंसकभाव नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : वह वास्तव में प्रेम है?

दादाश्री : वह प्रेम होता ही नहीं। प्रेम हो तो गुस्सा नहीं होता। लेकिन हिंसकभाव नहीं है उसके पीछे, इसलिए उसे क्रोध नहीं कहा जाता। क्रोध हिंसकभाव सहित होता है।

जगत् वश होता है प्रेम से

एक बाप ने उसके बेटे को ज़रा-सा ही छोड़ा तो बेटा गुस्सा हो गया, और बाप से कहने लगा कि, 'मुझे आपके साथ रास नहीं आएगा।' फिर बाप बेटे से कहने लगा कि, 'भाई! मैंने तुझे कुछ बुरा नहीं कहा है। तू क्यों गुस्सा होता है?' तब मैंने बाप से कहा कि, 'अब क्यों कमरा धोते हो? पहले क्यों हिलाया? किसीको हिलाना मत। ये पक्के फल हैं। कुछ बोलना मत। मेरी भी चूप और तेरी भी चूप। खा, पीकर मौज करो।'

टकराव होता है अहंकार से

प्रश्नकर्ता : बच्चों को डाँटे नहीं तब तक शांत ही नहीं होते, इसलिए डाँटना पड़ता है न!

दादाश्री : नहीं, डाँटने में हर्ज नहीं है। लेकिन आप डाँटते हो तब आपका मुँह बिगड़ जाता है, इसलिए जिम्मेदारी है। आपका मुँह बिगड़े नहीं ऐसे डाँटें न! मुँह ठीक रखकर डाँटो, बहुत डाँटो! आपका मुँह बिगड़ जाता है अर्थात् आप जो डाँटते हो वो आप अहंकार से डाँटते हो!

प्रश्नकर्ता : फिर तो बच्चों को ऐसा लगता है कि ये झूठ-मूठ डाँटते हैं!

दादाश्री : बच्चे इतना समझें तो बहुत हो गया। तो उन पर असर होगा, वर्ना असर ही नहीं होगा। आप बहुत डाँटो तो वे समझते हैं कि ये कमज़ोर व्यक्ति हैं। वे मुझसे कहते हैं, 'हमारे फादर बहुत कमज़ोर व्यक्ति हैं, बहुत चिढ़ते रहते हैं।'

बच्चों पर आप गुस्सा हुए तो वह नयी लोन ली कहलाए। क्योंकि, उन पर चिढ़ने में हर्ज नहीं है, लेकिन आप खुद चिढ़ते हो उसमें हर्ज है।

ड्यूटि बाउन्ड : विल बाउन्ड

माँ-बाप ने पाँच हज़ार का कर्ज़ लेकर बेटे को पढ़ाया हो फिर भी बेटा कभी अपमान करें तो बोलना नहीं चाहिए कि हमने तुझे पढ़ाया। वह तो

दादावाणी

हम 'ड्यूटि बाउन्ड' थे, फरजियात (अनिवार्य) था। फरजियात था वह किया। हमें फ़र्ज़ निभाना चाहिए। फरजियात अर्थात् 'ड्यूटि बाउन्ड' और मरजियात (ऐच्छिक) अर्थात् 'विल बाउन्ड'। लोग फरजियात को मरजियात मानते हैं। अरे, तेरी विलिंगनेस (इच्छा) जिस तरफ़ होगी उस तरफ़ संसार बढ़ रहा है। फरजियात है उसमें मरजियात का चित्रण चित्रित कर रहे हैं। जो बदल सकते हैं, वह विल बाउन्ड है। बहुत से बच्चे बाप को उल्टा जवाब देते हैं तब बाप गुस्सा हो जाता है और सुना देता है कि 'मैंने तुझे पढ़ाया, लिखाया, बड़ा किया।' अरे, फरजियात था। तेरा मरजियात जो है उसे कहकर दिखा न! जो फरजियात है उसकी माला किसलिए जपते हो? मरजियात को ढूँढ़ निकालो।

कमज़ोरी जाए तो प्रभाव पड़े

प्रश्नकर्ता : सात्त्विक चिढ़ अथवा सात्त्विक क्रोध अच्छा है या नहीं?

दादाश्री : उसे लोग क्या कहते हैं? बच्चे भी उसे ऐसा कहते हैं कि, 'ये तो चिढ़ते ही रहते हैं!' चिढ़, वह बेवकूफी है, फूलिशनेस है! चिढ़ को कमज़ोरी कहा जाता है। बच्चों से हम पूछें कि, 'तुम्हारे पापा कैसे हैं?' तब वे भी कहते हैं कि, 'वे तो बहुत चिड़चिड़े हैं!' बोलो, अब आबरू बढ़ी या घटी? यह विकनेस (कमज़ोरी) नहीं होनी चाहिए। यानी, सात्त्विकता हो वहाँ विकनेस नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : कोई व्यक्ति छोटे बच्चे को बहुत मारता हो और उस समय हम वहाँ से गुज़र रहे हों, तब उस व्यक्ति को हम मनाएँ और नहीं माने तो अंत में डाँटकर या क्रोध करके वहाँ से हटाना चाहिए या नहीं?

दादाश्री : क्रोध करोगे तो भी वो मारे बगैर रहेगा नहीं। अरे, आपको भी मारेगा! फिर भी, उसके साथ आप क्रोध किसलिए करते हो? उसे शांति से कहो, व्यवहारिक बात-चीत करो। बाकी, उस पर क्रोध करो, वह तो विकनेस है!

प्रश्नकर्ता : तो बच्चे को मारने देना है?

दादाश्री : नहीं, वहाँ पर हमें जाकर कहना चाहिए कि, 'भाई, किसलिए आप ऐसा कर रहे हो? इस बच्चे ने आपका क्या बिगाड़ा है?' ऐसे उसे समझाकर बात करनी चाहिए। आप उस पर क्रोध करो, फिर तो ये क्रोध आपकी कमज़ोरी है। पहले खुद में कमज़ोरी नहीं होनी चाहिए। जिसमें कमज़ोरी नहीं होती उसकी पर्सनालिटी (प्रभाव) पड़ती है न! फिर वो अगर ऐसे ही, साधारण ही कहे न, फिर भी सब मान जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : शायद नहीं माने।

दादाश्री : नहीं माने, उसका क्या कारण है? आपकी पर्सनालिटी पड़ती नहीं है। घर में छोटे बच्चों से पूछें कि, 'तुम्हारे घर में पहला नंबर किसका?' तब बच्चे खोजबीन करते हैं कि मेरी माँ गुस्सा नहीं होती, इसलिए सबसे अच्छी वो है, पहला नंबर उसका। फिर दूसरा, तीसरा ऐसे करते-करते पापा का नंबर अंत में आता है! क्यों? क्योंकि वे चिढ़ते हैं? चिड़चिड़े हैं इसलिए। मैं कहूँ कि, 'पापा पैसे लाकर खर्च करते हैं फिर भी उनका अंतिम नंबर?' तब वो हाँ कहता है। बोलो अब, महेनत-मजूरी करें, खिलाएँ, पैसा लाकर दें, फिर भी अंतिम नंबर हमारा ही आता है न?

मतलब, कमज़ोरी नहीं होनी चाहिए, चारित्रवान होना चाहिए। मेन ऑफ पर्सनालिटी होना चाहिए! लाखों गुंडे उसे देखते ही भाग जाए! चिड़चिड़े व्यक्ति से तो कोई भाग नहीं जाता, उल्टा मारते भी हैं! जगत् तो कमज़ोरी को ही मारता है न!

पर्सनालिटी कब आती है? विज्ञान समझें तब पर्सनालिटी आती है। इस जगत् में, जो भूला जाता है वह ज्ञान है और जो कभी भी नहीं भूलाया जाता वह विज्ञान है!

फुँकार मारना, लेकिन नाटकीय

एक बैंक का मेनेजर कहने लगा, 'दादाजी, मैंने तो कभी भी वाइफ को या बेटे को या बेटी को एक शब्द भी नहीं कहा है। चाहे कोई गलती करे, चाहे जो करते हों, लेकिन मैं बोलता नहीं हूँ।' वह समझा कि दादाजी मुझे अच्छी-सी पघड़ी पहना देंगे! वह कौन-सी आशा रखता था, समझे न? और मुझे उस पर बहुत गुस्सा आया कि आपको किसने बैंक का मेनेजर बनाया? आपको बेटे-बेटी को सँभालना नहीं आता और पत्नी को सँभालना नहीं आता! तब वो तो घबरा गया बेचारा। लेकिन मैंने उनसे कहा, 'आप अंतिम प्रकार के बेकार व्यक्ति हो। इस दुनिया में किसी काम के नहीं हो आप।' वो व्यक्ति मन में मानता था कि मैं ऐसा कहूँगा तो 'दादा' मुझे बड़ा इनाम देंगे। अरे, इसका इनाम होता है? बेटा उल्टा करता हो, तब हमें उसे 'क्यों ऐसा किया? अब ऐसा मत करना' ऐसा नाटकीय बोलना है। नहीं तो बेटा ऐसा ही समझेगा कि हम जो कुछ भी करते हैं वो 'करेक्ट' (सच) ही है। क्योंकि पिताजी ने 'एकसेप्ट' (स्वीकार) किया है। बोले नहीं, इसलिए तो घर के लोग बिगड़ गए हैं। बोलना सब है, लेकिन नाटकीय! बच्चों को रात को बिठाकर समझाना चाहिए, बातचीत करनी चाहिए। घर के सभी कोनों में से कचरा निकालना पड़ेगा न? बच्चों को थोड़ा-सा हिलाने (सावधान करने) की ही ज़रूरत है। वैसे संस्कार तो होते हैं, लेकिन हिलाना पड़ता है। उनको हिलाने में कोई गुनाह है?

हर एक में 'नोर्मालिटी' ले आओ। एक आँख में प्रेम और एक आँख में सख्ती रखनी चाहिए। सख्ती से सामनेवाले को ज़्यादा नुकसान नहीं होता, क्रोध करने से बहुत नुकसान होता है। सख्ती यानी क्रोध नहीं, लेकिन फुँकार। हम भी व्यापार करने जाते हैं तब फुँकार मारते हैं, 'क्यों ऐसा करते हो? क्यों काम नहीं करते?' व्यवहार में जिस जगह जो भाव की ज़रूरत होती है, वहाँ वह भाव उत्पन्न नहीं हुआ तो उसे व्यवहार बिगाड़ा कहते हैं।

ज़रूरत विवेक की व्यवहार में

आपको व्यवहार में सबकुछ करने में हर्ज नहीं है, लेकिन निश्चय से करें तो गलत है। लोग निश्चय से बरतते हैं न?

प्रश्नकर्ता : लेकिन व्यवहार धर्म में तो रहना पड़ता है न?

दादाश्री : व्यवहार धर्म में तो आप किसी दिन रहे ही नहीं हो। व्यवहार हमेशा आदर्श होता है। जो व्यक्ति निश्चय चूका न, उसे व्यवहार नहीं कहा जाता (वह व्यवहार नहीं कहलाता)। निश्चय को निश्चय में रखना है और व्यवहार को व्यवहार में रखना है, उसे आदर्श व्यवहार कहा जाता है। मैं पूरा दिन आदर्श व्यवहार में ही रहता हूँ। मेरे घर पर आसपास पूछने जाएँगे न तो सब कहेंगे, 'कभी उन्होंने झगड़ा नहीं किया है। कभी चिल्लाए नहीं है। कभी किसी पर साथ गुस्सा नहीं हुए हैं।' ऐसा सब, आसपासवाले कहें तो वह आदर्श व्यवहार कहलाता है या नहीं कहलाता?

प्रश्नकर्ता : कहलाता है।

दादाश्री : और आपके लिए आसपास के लोगों से पूछने जाएँ तो? क्या ऐसा कहेंगे कि, 'वे कभी भी ऊँची आवाज़ में बोले नहीं हैं?'

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तब आपने तो व्यवहार भी बिगाड़ा और निश्चय भी बिगाड़ा। व्यवहार इतना ही करना है कि तू बाप है इसलिए बेटे के फेरे तू मत लगाना, वर्ना उसे बुरा लगेगा। और जो बेटा है उसके लिए व्यवहार इतना है कि बाप के लिए तू फेरे लगाना, वर्ना गलत दिखेगा। इस प्रकार व्यवहार-विवेक चूकना नहीं है।

वहाँ ज़रूरत लाल सिग्नल की

जगत् के लोग क्या कहते हैं कि इस भाई ने इस पर क्रोध किया, इसलिए वो गुनहगार है और

दादावाणी

उसने पाप बाँधा। भगवान ऐसा नहीं कहते। भगवान कहते हैं कि 'बेटे पर क्रोध नहीं किया, इसलिए उसका बाप गुनहगार है। इसलिए उसे सौ रुपये का दंड दो।' तब कहे, 'क्रोध करना वो अच्छा है?' तब कहते हैं, 'नहीं, लेकिन इस समय उसकी ज़रूरत थी। अगर यहाँ क्रोध नहीं किया होता तो बेटा उल्टे रास्ते पर चला जाता।'

मतलब क्रोध एक तरह का लाल सिग्नल है, दूसरा कुछ नहीं है। तूने आँख नहीं दिखाई होती न, यदि क्रोध नहीं किया होता न, तो बेटा उल्टे रास्ते पर चला जाता। इसलिए भगवान तो, बेटे पर बाप क्रोध करता है फिर भी उसे सौ रुपये इनाम देते हैं।

क्रोध, वो तो लाल झंडा है, ऐसा पब्लिक को पता नहीं है और कितने प्रमाण में लाल झंडा खड़ा रखना चाहिए, कितने समय तक खड़ा रखना चाहिए, उसे समझने की ज़रूरत है। यदि रेल गाड़ी जाती हो, और तब अगर ढाई घंटा लाल झंडा लेकर बिना कारण खड़ा रहे, तो क्या होगा? यानी, लाल सिग्नल की ज़रूरत है, लेकिन कितने समय तक उसे रखना, ये समझने की ज़रूरत है।

वहाँ कुदरत का न्याय कैसा?

लोग क्या कहेंगे कि 'ये बाप अपने बच्चों पर इतना गुस्सा हो गया है, इसलिए ये बाप नालायक व्यक्ति है।' और कुदरत के यहाँ इसका क्या न्याय होता होगा? कि 'इस बाप के हिस्से में पुण्य बाँधो।' क्रोध करता है फिर भी पुण्य माना जाता है? हाँ, क्योंकि बेटे के हित के लिए खुद संघर्षण मोल लेता है न! बेटे के सुख के लिए खुद ने संघर्षण मोल लिया इसलिए पुण्य बाँधो! बाकी, हर एक प्रकार के क्रोध पाप ही बाँधते हैं, लेकिन सिर्फ यही क्रोध जो बच्चों के या मित्र के सुख के लिए करते हो, आपका सुलगाकर उसके सुख के लिए करते हो, इसलिए उसका पुण्य बाँधता है। फिर भी यहाँ तो लोग उसे अपयश ही देते रहते हैं! लेकिन इश्वर के घर पर सच्चा

कानून है या नहीं? खुद के बच्चों पर, बेटे पर क्रोध करता है न, बहुत जबरदस्त क्रोध करता है, लेकिन उसमें हिंसकभाव नहीं होता, दूसरी सभी जगहों पर हिंसकभाव होता है। फिर भी उसमें तांता रहता है, क्योंकि बेटे को देखते ही भीतर उसे क्लेश होता रहता है, इसलिए उसका तांता रहता है। भगवान ने तो क्या कहा है कि बेटे पर, बेटे पर गुस्सा करता है, फिर भी उसका पुण्य बाँधता है। क्योंकि भीतर हिंसकभाव नहीं है। फिर साथ ही तांता नहीं हो तब क्या होता है? मोक्ष होता है। क्रोध में हिंसकभाव और तांता, दोनों नहीं हों तो मोक्ष होता है। और हिंसकभाव नहीं है, केवल तांता है, फिर भी पुण्य बाँधता है। कैसी सूक्ष्मता से भगवान ने ढूँढ निकाला है न!

क्रोध करता है फिर भी बाँधता है पुण्य

बेटे पर क्रोध करते हो लेकिन आपका अंदर भाव क्या है, कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए।' आपका अंदर भाव क्या है? अर्थात्, यह रौद्रध्यान था, वह धर्मध्यान में परिणमित हुआ। क्रोध हुआ फिर भी परिणमित हुआ धर्मध्यान।

क्योंकि, यह देखा जाता है कि क्रोध करने में उसका हेतु क्या है?

प्रश्नकर्ता : प्रशस्त क्रोध।

दादाश्री : दूसरा वह अप्रशस्त क्रोध, वह बुरा माना जाता है।

मतलब क्रोध में भी इतना ये भेद पड़ा है। दूसरा, पैसों के लिए बेटे को झिड़काएँ कि 'तू व्यापार में ठीक से ध्यान देता नहीं है', वह क्रोध अलग। बेटे को सुधारने के लिए, चोरी करता हो, दूसरा (उल्टा) करता हो, उसके लिए हम बेटे को डाँटें, क्रोध करें, उसका फल भगवान ने पुण्य कहा है।

लेकिन बाप, बच्चों पर अकुलाता है। क्रोध करे, तो उसका क्या फल आता है? पुण्य बाँधता है?

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : बाप तो अकुलाता है, लेकिन बेटा बाप पर अकुला जाए तो?

दादाश्री : तो पाप बँधता है।

कहना, लेकिन विनय से

प्रश्नकर्ता : दादा, मेरा बेटा महीने के पंद्रह सौ रुपये कमाता है। मैं रीटायर्ड हूँ, उसके साथ रहता हूँ। अब बच्चे और बहू मुझे टोकते रहते हैं कि 'आप ऐसा क्यों करते हो? बाहर क्यों जाते हो?' इसलिए मैं उनसे कहनेवाला हूँ कि 'मैं घर में से चला जाऊँगा।'

दादाश्री : खिलाते-पीलाते हैं अच्छी तरह से?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : तो फिर 'चला जाऊँगा' ऐसा नहीं कहना चाहिए। शायद कहने के बाद नहीं जा पाएँ, हमारे शब्द हमें ही निगलने पड़ते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो मुझे उनसे कुछ भी नहीं कहना चाहिए?

दादाश्री : बहुत हो, तो धीरे से कहना कि 'ऐसा करो तो अच्छा, फिर मानना या नहीं मानना आप लोगों की मर्जी की बात है।' आपकी धौल सामनेवाले को लगे ऐसी हो और उससे सामनेवाले में बदलाव आता हो तो ही धौल मारना, और यदि ढीली धौल मारोगे, तो उल्टा बिगड़ेगा। उससे उत्तम तो, धौल नहीं मारना वह है।

गुस्से का परिणाम कैसा?

प्रश्नकर्ता : दादा, मैं हार्ट का पेशन्ट हूँ, और वे मुझे कहें कि 'आप ऐसा करो', और मैं मानूँ नहीं, फिर मुझे क्या करना चाहिए?

दादाश्री : उसका भी मैं आपको उदाहरण देता हूँ। एक वैद्य थे और वे बहुत सिन्सीयर थे। खुद की ज़रूरत हो उतने ही पैसे लेते थे। पैसे भी

ज्यादा नहीं लेते थे। ये पुराने ज़माने की बात है। अब उसे एक दर्दी मिला, उसने कहा 'मेरी दवाई करो', इसलिए उन्होंने कहा कि 'तुम्हें खासकर मिर्च का परहेज़ रखना है।' फिर उसको महीनेभर दवाई दी, फिर भी कुछ असर नहीं हुआ। इसलिए वैद्य के मन में ऐसा हुआ कि 'ऐसा क्यों? क्या होगा? मेरी देखने में गलती हुई है, या निदान में कुछ गलती हुई है।' फिर दूसरा महीना हुआ तो भी कोई असर नहीं हुआ। इसलिए वैद्य के मन में ऐसा हुआ कि 'मैं उसके घर जाकर देखूँ कि क्या वो मिर्च खाता है?' वैद्य बार-बार पूछता था कि 'कभी मिर्च खाते हो?' 'नहीं, मैं छूता ही नहीं हूँ न, मैं उसे देखता भी नहीं हूँ', दर्दी ऐसा कहता था। और वो वैद्य चुपचाप उसके घर पर गए, तब उनकी (दर्दी की) थाली में दो इतनी बड़ी-बड़ी हरी मिर्च थी। इसलिए वैद्य को इतना गुस्सा आया, इतना गुस्सा आया, इतना गुस्सा आया न, तो प्रेशर बढ़ गया और वहीं के वहीं मर गए। और उस दर्दी ने फिर आराम से मिर्च खाई।

प्रश्नकर्ता : क्रोध और ब्लडप्रेसर के बीच रिलेशन है?

दादाश्री : ओहोहो! क्रोध तो ब्लडप्रेसर का फादर है। ब्लडप्रेसर का फादर नहीं होगा और सिर्फ मदर ही होगी तो उसके बच्चे नहीं होंगे फिर। ब्लडप्रेसर बढ़ नहीं जाएगा। फादर नहीं हो और सिर्फ मदर हो तो बच्चे नहीं होंगे न! क्रोध तो फादर है।

वह कमज़ोरी होती है सबमें

प्रश्नकर्ता : उम्र बढ़ने की वजह से क्रोध हो जाता है और दिमाग का संतुलन कम हो जाता है क्या? कमान छटक जाती है क्या?

दादाश्री : कमान छटक जाती है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, क्रोध ज़्यादा आ जाता है।

दादाश्री : शरीर मजबूत हो तब तक क्रोध

दादावाणी

कम आता है और कमजोरी आई इसलिए चिल्लाकर लोग भी शांत कर देते हैं।

प्रश्नकर्ता : ऐसा मुझ में है।

दादाश्री : नहीं। आप में है और सबमें है। आप सिर पर ले लेते हो।

हिसाब केवल लेन-देन

प्रश्नकर्ता : एक सामान्य बात कहते हैं न कि ये सब जो कुटुंब (के व्यक्ति) होते हैं न, वो एक वंश परंपरा इकट्ठी होती हैं।

दादाश्री : हाँ, वे तो सब अपने पहचानवाले ही। अपना ही सर्कल सब साथ में रहता है। समान गुणवाले हैं, इसलिए वहाँ पर राग-द्वेष के कारण जन्म होता है और वे भाव चुकाने के लिए इकट्ठे होते हैं। बाकी, आँखों से जैसा दिखता है वह भ्राँति से है और ज्ञान से वैसा नहीं है।

प्रश्नकर्ता : आपने जैसा कहा न हर एक जीव स्वतंत्र है।

दादाश्री : स्वतंत्र अर्थात् इतना स्वतंत्र है कि इतना-सा भी कोई किसीको दे सके ऐसा नहीं है। लोग तो जैसा आँखों से दिखता है वैसा बोलते हैं। बुद्धि से समझ में आए ऐसा बोलते हैं। लेकिन, यह समझ में आए ऐसी वस्तु नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अमुक समय पर समझ नहीं होने से कहते भी हैं, 'आप क्रोधी हो, इसलिए मैं क्रोधी हुआ हूँ।'

दादाश्री : हाँ, ऐसा भी कहते हैं और बाप को मूर्ख बनाते हैं।

प्रश्नकर्ता : वे मूर्ख बनाते हैं?

दादाश्री : मूर्ख ही बनाता है न! 'आप क्रोधी इसलिए मैं क्रोधी', ऐसा बाप को कहे मतलब 'गुनहगार आप, मैं गुनहगार नहीं', ऐसा हुआ न! मतलब बाप मूर्ख नहीं बना? 'यदि सयाने होते तो मैं

सयाना होता', कहता है! लेकिन, एक इतना-सा भी गुणधर्म दिया जा सके ऐसा नहीं है। तब ये तो कहेंगे, 'रूपरंग तो उसके बाप का ही।' अरे ऐसा नहीं होता, ये तो एडजस्टमेंट है इसलिए ऐसा दिखता है। माँ और बाप दोनों लम्बे होते हैं और बच्चे टिंगने होते हैं। ये तो विरोधाभास है।

छूटो चुकाकर ऋणानुबंध

प्रश्नकर्ता : मतलब, जो भाव चुकाने के होते हैं, ऋणानुबंध के हिसाब चुकाने के होते हैं, वे चुकता होकर चले जाते हैं।

दादाश्री : हाँ, वे चुकता हो ही जाते हैं सारे। इसलिए मुझे वहाँ पर ये विज्ञान सारा खुला करना पड़ा कि 'अरे, बाप का क्या दोष है? तू क्रोधी, तेरा बाप क्रोधी, लेकिन तेरा ये भाई क्यों क्रोधी नहीं है! यदि तुझ में तेरे बाप के गुण उत्पन्न हुए हो, तो फिर ये तेरा भाई शांत स्वभाव का क्यों है?' यानी, ऐसा नहीं समझने से लोग यों ही हाँकते हैं और जो आँखों से दिखता है उसे सत्य मानते हैं।

सारे हिसाब चुकाने के लिए ही जगत् है। 'जगत् जीव है कर्माधीन कुछ ना किससे लेना-देना।' अपने-अपने स्वभाव में रहो, कहते हैं। यह तो सब अपने-अपने कर्म के अधीन ही घूमते रहते हैं। कोई किसीको कुछ दे नहीं सकता। भगवान भी कुछ दे नहीं सकते, तो बाप क्या देनेवाला था! जिसे संडास जाने की शक्ति नहीं है! वस्तु पद्धति के अनुसार होनी चाहिए, कि जिसका अंत आए। बात का अंत आना चाहिए न!

बात बहुत समझने जैसी है। यह बहुत गहरी बात है। यह तो मैंने बताई उतनी नहीं है। यह बहुत गहरी बात है! भगवान भी इतना नहीं दे सकते। यह तो सारे हिसाब ही चुकता होते हैं!

यानी, ज्ञान वस्तु सत्य है, यथार्थ ज्ञान है यह! यह शुक्लध्यान है उसमें जैसा है वैसा देखो!

जय सच्चिदानंद

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

त्रिमंदिर अडालज

दि. २६ अक्टूबर, रात ८-३० से १० तथा २७ अक्टू., सुबह ८-३० से १ - दिपावली के अवसर पर भक्ति-दर्शन
दि. १४ से २१ जनवरी - आप्तवाणी-४ सत्संग पारायण तथा २२ जनवरी - सीमंधर स्वामी मूर्तिओं की प्राणप्रतिष्ठा

राजकोट

दि. १८-१९ नवे. (शुक्र-शनि), शाम ७-३० से १०-सत्संग तथा २० नवे. (रवि), शाम ६-३० से १०-ज्ञानविधि
स्थल : विराणी हाइस्कूल ग्राउन्ड, टागोर रोड, राजकोट. संपर्क : 9879137971, 9924343478

जामनगर

दि. २५-२६ नवे. (शुक्र-शनि), शाम ६-३० से ९-सत्संग तथा २७ नवे. (रवि), शाम ५-३० से ९-ज्ञानविधि
स्थल : प्रदर्शन ग्राउन्ड, सात रस्ता सर्कल, जामनगर. संपर्क : 9377716561, 9428570212

अहमदाबाद

दि. २-३ दिसम्बर (शुक्र-शनि), शाम ७ से ९-३०-सत्संग तथा ४ दिस. (रवि), शाम ५ से ८-३०-ज्ञानविधि
स्थल : अमदावाद एज्युकेशन सोसायटी ग्राउन्ड, संदेश प्रेस के सामने, वस्त्रापुर. संपर्क : 9327757143

अंकलेश्वर

दि. १७ तथा १९ दिस. (शनि-सोम), शाम ६ से ८-३०-सत्संग तथा १८ दिस. (रवि), शाम ५-३० से ९-ज्ञानविधि
स्थल : रामकुंड, हांसोट रोड, अंकलेश्वर (जि. भरूच). संपर्क : 9714727829, 9825753533

सुरत

दि. २३-२४ दिस. (शुक्र-शनि), शाम ८-३० से ११-सत्संग तथा २५ दिस. (रवि), शाम ५-३० से ९-ज्ञानविधि
स्थल : जीवराज धारुका कोलेज ग्राउन्ड, कापोदरा पोलीस स्टेशन के सामने, वराछा रोड. संपर्क : 9924343717

गोधरा में निर्मित त्रिमंदिर का प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

दि. २८ दिसम्बर २०११ से १ जनवरी २०१२ (बुधवार से रविवार)

सत्संग : दि. २८-२९ दिसम्बर सुबह-शाम ९-३० से १२, शाम ४-३० से ७, दि. ३१ दिस. शाम ४-३० से ७
ज्ञानविधि : दि. ३० दिसम्बर (शुक्र) दोपहर ३-३० से ७

अन्य भगवंतो की प्राणप्रतिष्ठा : दि. ३०-३१ दिसम्बर, सुबह ६ से ८, पूजन-आरती : सुबह ९-३० से ११

मुख्य भगवंतो की प्राणप्रतिष्ठा : दि. १ जनवरी २०१२, सुबह ६ से ९, पूजन-आरती : सुबह १० से १२

स्थल : त्रिमंदिर, भामैया गाँव, एफसीआई गोडाउन के सामने, गोधरा, जि. पंचमहाल. संपर्क : 9825431503

नोंध : इस महोत्सव में भाग लेने के लिए दि. ४ दिसम्बर २०११ से पहले अपने नज्दिकी सत्संग सेन्टर और
अगर नज्दिक में सत्संग सेन्टर न हो तो ०७९-३९८३०४०० फोन नं. पर रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

'दादावाणी' पत्रिका के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पत्ता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA11250 # और यदि लेबल पर ग्राहक नं. के बाद ## हो तो अगले महीने आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. DHIA11250 ##. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. १ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पीनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी अवश्य दें।

दादावाणी

परम पूज्य दादाश्री की जन्मभूमि, कर्मभूमि तथा निर्वाणभूमि रही, उस वडोदरा शहर में..

परम पूज्य दादा भगवान का १०४वाँ जन्मशताब्दी महोत्सव

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में... दि. ५ नवम्बर से ९ नवम्बर २०११

सत्संग शिविर : दि. ५ से ८ नवम्बर, सुबह ९-३० से १२, शाम ७-३० से १० (६ नव. शाम के सिवा)

ज्ञानविधि : दि. ६ नवम्बर, शाम ४-३० से ८

जन्मजयंती दिन : दि. ९ नवम्बर, सुबह ८-३० से १२-३० तथा शाम ४-३० से ६-३०

स्थल : वेक्सिन इन्स्टिट्यूट ग्राउन्ड, ओल्ड (पुराना) पादरा रोड, वडोदरा.

संपर्क : 9924343335, 9925642664, E-mail: dadamandir@dadavadodara.org

नोंध: महोत्सव स्थल रेल्वे स्टेशन से 4 कि.मी., निझामपुरा मेइन बस स्टेशन से 6 कि.मी. तथा एयरपोर्ट से 12 कि.मी. के अंतर पर स्थित है। प्राइवेट बसों का मुख्य जंक्शन स्टोप पंड्या ब्रीज, सरदार नगर के पास है। जो महोत्सव स्थल से 5 कि.मी. की दूरी पर है। स्थल पर पहुँचने के लिए इन स्थलों पर से ओटो रिक्शा, टेक्सी और सीटी बसें मिलेगी।

कार्यक्रम में भाग लेनेवालों के लिए विशेष सूचनाएँ :

- 1) इस महोत्सव में भाग लेने के लिए पहले से रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।
- 2) स्त्रियों एवं पुरुषों के रहने की व्यवस्था अलग-अलग जगहों पर हो सकती है, इसलिए अपना सामान अलग से लाएँ।
- 3) ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो (तकिया) तथा जरूरी गरम कपड़े साथ लाएँ। कीमती चीजें साथ में न लाएँ।
- 4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्त आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आइ-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर..

- भारत**
- ✦ 'दूरदर्शन' पर हर बुध-गुरु-शुक्र सुबह ९ से ९-३० (हिन्दी में) - नई दृष्टि, नई राह
 - ✦ 'आस्था' पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-५० (हिन्दी में)
 - ✦ 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज़ सुबह ९ से ९-३० और शाम ८-३० से ९ (गुजराती में)
 - ✦ 'दूरदर्शन-सह्याद्रि' पर सुबह ७-३० से ८ (सोम-मंगल-गुरु-शनि), सुबह ७-१५ से ७-३० (बुध-शुक्र) (मराठी में)
 - ✦ 'दूरदर्शन' डीडी-गिरनार पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)
- USA**
- ✦ 'SAHARA ONE' पर सोम से शुक्र, सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
- USA-UK**
- ✦ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० (गुजराती में)

पूज्य नीरुमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर..

- भारत**
- ✦ 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३० और शाम ५ से ५-३० (गुजराती में)
 - ✦ 'दूरदर्शन-गिरनार' पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० और दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
 - ✦ सोहम चैनल पर हर रोज़ दोपहर १-३० से २, शाम ६-३० से ७ (रिपीट) (हिन्दी में)
- USA**
- ✦ 'TV Asia' पर सोम से शुक्र, सुबह ७-३० से ८ (गुजराती में)
- USA-UK**
- ✦ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (गुजराती में)
 - ✦ समग्र विश्व में (भारत के अलावा) सोनी टीवी पर (हर रोज़) सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में)

Contact : Trimandir, Simandhar City, Ahmedabad-Kalol Highway,P.O.:Adalaj, Dist.:Gandhinagar, Pincode-382421. **Gujarat, India. Tel. :** (079) 39830100, **E-mail:** dadavani@dadabhagwan.org

Vadodara : 9924343335, **Mumbai :** 9323528901, **USA :** +1-877-505-3232(DADA), **UK :** +44 7956476253

Websites : (1) www.dadabhagwan.org (2) www.dadashri.org

अक्टूबर २०११
वर्ष - ६, अंक - १२
अखंड क्रमांक - ७२

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2009-2011
Valid up to 31-12-2011
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2009-2011
Valid up to 31-12-2011
Posted at AHD, P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

परम पूज्य दादा भगवान का 104 वाँ जन्मजयंती महोत्सव

स्थल पर पहुँचने का की-मैप

निहामपरा नया बस स्टेशन
एयरपोर्ट
अमिननगर सर्कल
L & T सर्कल
फतेहगंज सर्कल
शाम्बी खिज
(प्राइवेट बस जंक्शन)
GEB सर्कल
R.C. दम रोड
चकली सर्कल
जूना पादरा रोड
वेक्सरीन घाउन्ड
प्रवेश

परम पूज्य
दादा भगवान का 104 वाँ
जन्मजयंती महोत्सव
दि. 5 से 9 नवम्बर 2011
वेक्सरीन घाउन्ड, वडोदरा

जन्मजयंती स्थल: वेक्सरीन घाउन्ड, वडोदरा.



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.